अंकुर

अंकुर

लघु कथा संग्रह

राम विलास साहु

पोथीकेँ तत्खनात् व्यक्तिगत रूपे सोझहा आनल जा रहल अछि... ।

-लेखक

समरपन भाव

अन्हरिया राति

इजोतक नै कोनो उपाय

सोचै छेलौं केना भागत

ई वियाधि

सोचैत मनमे आएल

सहजे एक उपाय फुराएल

एक दीप जराएल

किछु अन्हार भागल-पड़ाएल

मुदा सोचलौं ई अन्हरिया

बेर-बेर आबि दोहराएत!

मन पड़ल

ज्ञानक दीप

◌

पहिल संस्करण : जून- 2016
दोसर संस्करण : अगस्त- 2016

दाम : 151/-

अक्षर संयोजक : उमेश मण्डल
Co-Editor : *Videha 1st Maithili Fortnightly E-Magazine*
http://www.videha.co.in
(ISSN 2229-547X)
Mobile : +918539043668

कटिंग : दी साहु प्रिन्टिग प्रेस, निर्मली (सुपौल)

प्रिन्टिग एण्ड बान्डिग : श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल)

Distributor :
Pallavi Distributors Ward no 06 Nirmali (Supaul)
Pin code no- 847452
Mobile No- +919572450405

Ankur : Collection of Short Maithili Stories
by Shri Ram Bilas Sahu.

कथाक सत्तैर-

डोमक आगि

जेठरैत कक्काक मृत्यु सए बर्खक ऊपरे उमेरमे भेलैन। सौंसे गाममे सोग पसैर गेल। गाममे चर्चा हुअ लगलै जे आइ गामक मालिकक अन्त भेने एकटा युगक अन्त भऽ गेल। जेठरैत कक्काक धाक जहिना गामक लोक मानैत तहिना आदरो करैत। मुइला पछाइत समुच्चा गामक लोक दाह संस्कारमे पँचकठिया दइले पहुँचल छल। भीड़ बहुत मुदा अखन धरि अछियामे आगि ने पड़ल छल। लोक सभ थाहा-थाही ठाढ़, कियो बैसल कनफुसकी करैत आ किछु लोक निर्गुन भजन गबैत रहए-

"हंसा उड़ि गेलै भम्हरा बनि हे...।"

"सभ दिन होत ने एक समाना...।"

कियो ई गबैत-

"आया है सो जाएगा राजा रंक फकीर...।"

भिनसरसँ दुपहर भेल जाइत रहै। अखन धरि लोक कोन आशामे समए बितबै छल, तेकर कोनो थाह-पता नहि छल। जखन बैसल-बैसल लोकक मन अगुताए लगलै, भूखसँ पेटमे बिलाइ कुदऽ लगलै, तखन जा कऽ

विलमक कारणक पता लगबऽ लगल।

मलिकपना-बला बात, के हिम्मत करत आ आगू भऽ पुछैले जाएत। अपनामे गुदुर-फुसुर करैत रहए। कियो आगू जेबे ने करए। तखने रौदी बाबा पहुँचला। पहुँचते बजला-

"अखन तक अछियामे आगियो ने पड़ल। किए एते अबेर भेल। धिया-पुता सभ भूखे लहालोठ होइए!"

सभ कियो रौदी बाबाकेँ कहलकैन-

"अहाँ बुढ़ो-पुरान छी आ गामक अनुभवी सेहो छी, से कनी झब-दे पता करियनु जे...।"

अगुताएल रौदी बाबा लोकक बीचे-बीच टाटीपर राखल मुर्दा लग पहुँचला। ओइ ठाम जेठरैत कक्काक परिवारक सभ लोकक संग पहुँचल कुटुम सभ अपनामे कहा-सुनी करै छल...।

लगमे जा रौदी बाबा जोरसँ पुछलखिन-

"यौ, अहाँ सभ लाशकेँ जरबैले एलौं हेन आकि गंगा सेबैले?"

जेठरैत कक्काक जेठका बेटा- रूपचन्द- कहलकैन-

"दादा, सभ किछु तैयार अए, मुदा बौकू डोमक इन्तजारमे छी।"

रौदी बाबा पुछलखिन-

"से किए?"

रूपचन्द-

"लोक सभ कहैए जे असमसान घाटपर डोमक हाथक आगि कीनि लाशकेँ जरौलासँ मोक्षक प्राप्ति होइ छै तँए कनी बौकू डोमक बाट तकै छी।"

रौदी बाबा बजला-

“अहीले एते अबैर होइए आकि आरो कोनो बात छह? गाममे डोम, सभ कियो भोरसँ आएल अछि ओकरा कानमे खबैरो ने छै।”

रूपचन्द-

“नइ हौ काका, काल्हिये बौकू समधियौना गेल रहए, खबैर भऽ गेल छै। ओ जखने-ने-तखने पहुँचैए-बला अछि।”

रूपचन्दक बात सुनिते लगमे बैसल शिवलाल काकाकेँ अनरगल लगलैन। तड़बाक लहैर मगज धरि पहुँच गेलैन। जोरसँ बाजए लगला-

“गामक एतेक बड़-बुजुर्ग जे आएल छैथ ओ बुड़िबके छैथ की! जखन एते बुझै छहक जे डोमक हाथक आगि कीनि कऽ ओइ आगिसँ मुखाग्नि करब तँ पहिने डोमकेँ बजा लइतह। पछाइत लोक सभकेँ बजैबतह। भिनसरसँ दुपहर भऽ गेल, सभ लोक भूखे-पियासे लहालोठ भऽ रहल अछि आ बौकू डोमक अखनो कोनो थाह-पता नइ छह!”

कनीकाल रहि फेर बजला-

“आइ-काल्हिक नव-नौतार सबहक नव-नव कानून। जखन जे मनमे फुड़ैए सहए करऽ लगैए! नव-नव जोगीकेँ भरि देह टीक्का!”

शिवलाल कक्काक तमसाइत बोल सुनिते लोक सभ लग अबऽ लगल। सभकेँ होइ करखन झबदे आगि पड़ै जे लोक पँचकठिया फेकि नहाइ-सोनाइले चलि जाएत। मुदा अखनो धरि बौकू डोम नहि पहुँचल।

सीताराम दास लग आबि बाजल-

"हौ रूपचन्द मालिक, कथी-ले एते लेट भऽ रहल छै हौ?"

बाजि सीताराम मने-मन सोचए लगल। जखन बुझै छिऐ जे डोम समाजक लेल एते पैघ लोक छै, बिना डोमक आगिसँ लोककेँ मरलोमे मुक्ति नइ भेटै छै, तखन डोमकेँ एते निच्चा किए बुझै छिऐ...। जखन कि जीबैतमे सभ डोमसँ छूबाइ छी, आ मुइलापर पैघ बुझै छी...। डोमो तँ अही समाजक लोक छी, मुदा गामसँ हटि कऽ वेचारा सभ गाममे बसैए। सभ कियो ओकरा अछोप बूझि आइ धरि लग बैस खेनाइ तँ दूर जे बातो ने करैए। एक लग्गा फटिकेसँ पुछ-पाछ करैए...। ऐबेरमे कोन असोकर्ज हुअ लगैए...।

रंग-बिरंगक बात सीताराम कक्काक मनमे नचऽ लगलैन। मिथिलाक समाजिक पद्धतिक बनाबटपर धियान गेलैन। जाइते मन जेना आरो चौतरफ वौआए लगलैन। बेवस्थाक जलियाएल रूप सभ सोझा अबऽ लगलैन। किछु बाजि नइ रहल छला।

तखने बौकू डोम हहाएल-फुहाएल आएल। बौकू डोमसँ आगि कीनल जाएत तेकर मोल-जोल हुअ लगल। पुछलापर बौकू बाजल-

> "जेठरैत काका गामेक मालिक छला तँ हमरो मालिक। हमरा कोनो लोभ-लालच नइ अछि मुदा दान-दछिनामे जे देब से खुशी-खुशी दऽ दिअ।"

रूपचन्द एकटा चानीक सिक्का दऽ आगि कीनऽ आगू बढ़ला। तखने शिवलाल काका, रौदी बाबा आ सीताराम दास अपनामे विचार कऽ बजला-

> "ई उचित नइ भेलऽ रूपचन्द। जेकरा खातिर भोरसँ दुपहर भऽ गेल, असमसान घाटपर लाश पड़ल अछि, तेकरा अहाँ एगो चानीक सिक्का...! जेठरैत काका गामक मालिक छला, ओ एते अरजि देने छैथ जे तीनो पीढ़ीमे नइ सधत। अपनो समांग बूझि बौकूकेँ जे देबै से दियौ, तखन ने बौकूओ अप्पन बूझत।"

सएह भेल। मुखाग्नि भेला पछाइत सभ काजक अन्त करैत सभ कियो आगूए तकैत विदा भेल। निर्गुन गौनिहारकेँ जेना बिसवास आरो बढ़ि गेलैन। पुन: गाबए लगला-

“सभ दिन होत ने एक समाना... ।”

O

स्वर्गक सुख

कोसी नदीक छीटपर बौकू सदाय खोपड़ी बना रहै छल। अगल-बगलमे आरो लोक सभ काश-पटेरक खोपड़ी बना रहै छल। कोसीक कटनियाँ भेने मुसहरी टोल उजैर गेल।

माघ मासक समए। वस्त्रक अभावसँ जाड़क मारल बौकू ठिठुरैत घूर तपै छल। जखने घूरमे आगि देलक आकि बौकूक बेटा-बेटी सटि कऽ बैस आगि खोरि-खोरि तापए लगल। पत्नी बलबावाली खोपड़ीसँ बकरी निकालैत जोरसँ बजली-

> "रातियोँ सिदहाक अभावमे सभ कोइ भुखले सुति रहलौं, आब दिनोमे बाल-बच्चा की खाएत। भूखसँ तरैप की बाल-बच्चाक संगे कोसीमे डुमि मरब।"

बौकू सदाय बाजल-

> "भोरे-भोर एहेन अशुभ बात नइ बाजू। शीतलहरी भरि कोनो तरहेँ परान बँचाउ। परान बँचत तँ लाखो उपए करब। कनिक्को समए फरिच हेतै तँ खाइ-पीबैक जोगार करब। एक तँ कोसी मैयाक मारल छी दोसर भगवानो बेमुख अछि।"

शीतलहरीक कोनो ठेकान नइ अछि मुदा भूख तँ समैपर लगिये जाइए। बेटा-बेटी रातिमे किछु ने खेलक। भिनसर होइते जोर-जोरसँ खाइले माँगए लगल।

बलबावाली पड़ोसीसँ दू सेर अल्हुआ पैंच आनि घूरक आगिमे पका-पका बेटा-बेटीकेँ देलक। अपनो दुनू परानी खेलक। ऊपरसँ पानि पीब-पीब भूख मेटेलक।

कुहेस कमिते रौदक दर्शन भेल। बलबावाली पतिकेँ कहलकैन-

"दू दिनसँ सुखल रोटी आ अल्हुआ खा कऽ कोनो तरहेँ दिन कटलौं मुदा आइ भातक कोनो जोगार करू।"

बौकू जाड़क कोनो परवाह नइ करैत धोतीक तर-ऊपरा ओढ़ैत बाजल-

"सब मिलि चलू परसा चौरीमे धानो लोढ़ब आ घोंघी-डोका सेहो बीछि आनब।"

साबिकेसँ परसा चौरीक सिंगरा-बेलौड़ आ सतराज धान नामी अछि। चौरी पहुँचते बौकू बेटा-बेटीकेँ कहलक-

"तूँ सभ घोंघी-डोका बीछि-बीछि छिट्टामे राख आ हम दुनू गोरे धान बीछै छी।"

दुनू गोरे मिलि करीब पसेरी भरि धान लोढ़लक। बेटा-बेटी घोंघी-डोका छिट्टामे उठौलक।

जखन घर चलैले तैयार भेल तँ बौकूक पत्नी बजली-

"सुतैले एकेटा गोनैर अछि। किछ नार सेहो नेने चलू। बिछौना मोटसँ देबै।"

नार बीछैकाल बौकू एकटा अढ़ैया भरिक काछुकेँ देखलक। देखते बौकू काछुकेँ उनटौलक।

काछुकेँ उनटा देने भागल नइ होइ छै। उठा कऽ तौनीमे बान्हलक। धान आ नार पत्नीक माथपर देलक आ अपने बौकू घोंघी-काछु लऽ बेटा-बेटीकेँ संग केने विदा भेल।

घर पहुँचते धान रौदमे पसारलक। पड़ोसीसँ उक्खैर-समाठ आनि धान-कुटि कऽ चाउर तैयार केलक। कौछक मासु बना रान्हलक। दोसर बरतनमे भात रान्हलक। सभ कोइ संगे खेनाइ खाइले बैसल।

जाड़क समैमे सिंगरा-बेलौड़ आ देसहरिया धानक चाउरक लाल-लाल भात तेलगर आ स्वादिष्ट होइते अछि। तैपर सँ कौछक मासु अपने तेलसँ ऐंठल-ऐंठल, भातपर पड़िते भातो तेलसँ तर-बतर भऽ गेल। बौकू बमरोटिया हाथसँ भात-मासु बँटबो करए आ खेबो करए। खेनाइ अधपेटा भेल तँ पानि पीब पियास मिझा नहमर साँस लैत बाजल-

> “एहेन खेनाइ भागशालीए लोक खाइए। राजा-महराजाकेँ नशीव नइ होइ छै। ई खेनाइ देखते केहेन-केहेन साधु-बबाजीकेँ सेहो मन ललिचा जेतइ।”

भोजन केलापर बौकू घूर पजारि देह टनकौलक। बलबावाली अरामसँ सुतैले ठेहुन भरि नार बिछौलक आ बाल-बच्चाक संग ओइपर सुतल। आ ऊपरसँ गोनैर ओढ़ि लेलक। कनीकालक पछाइत सबहक देह गरमा गेलै।

बलबावाली हाफी करैत पतिकेँ कहली-

> “औझका मेहनत साफल भेल। एहेन बिकट समैमे एहेन खेनाइ आ एहेन ओढ़ना बिछौना मिलल।”

नीक अवसर देख बौकू बाजल-

“ई छी स्वर्गक सुख। एहेन सुख रजो-रजवारकेँ सुन्दर महल आ सजल पलंगपर नइ भेटैए। अपना देखियो तर नारायण आ ऊपर गोविन्द छै आ बीचमे बौकूक परिवार अरामसँ सुतल छै। नइ कोनो डर-भर छै आ बगलेमे कासी मैयाक दिन-राति पहरा पड़ै छै।”

O

स्कूलक खिचड़ी

एकटा अभिभावक तमसा कऽ स्कूल पहुँचला। हेड मास्टरकेँ उपराग दैत बजला-

"पढ़ाइ-लिखाइ तँ जएह-सएह होइए। खाली खिचड़ीयेमे बेहाल रहै छी। जखन धिया-पुता पढ़बे नै करतै तखन तँ हाकिम-हुकुमक तँ बाते छोड़ू चपरासियो नै बनतै। एसँ नीक तँ प्राइवेटे स्कूल ने जइमे दूटा पाइये ने लगै छै, पढ़ाइ तँ नीक होइ छै। आइ तक ऐ स्कूलक बच्चा पढ़ि कऽ कोन नाम कमेलकै।"

मास्टर सहाएब शान्त भावसँ अभिभावककेँ समझबैत बजला-

"देखू, तमसाउ नै कोनो हम खिबै छी खिचड़ी। ई तँ सरकारक योजना छी। ऐ योजनासँ लाभो बहुत छै। निच्चासँ ऊपर धरि सभ माले-माल होइ छै।"

अभिभावक बजला-

"से केना?"

मास्टर सहाएब कहलखिन-

“सहीमे प्राइवेट स्कूलक बच्चा सभ पढ़ि-लिखि हाकिम-हुकुम बनै छै। आ ईहो देखैत हेबै जे ओ सभ माए-बाप, गाम-समाजकेँ छोड़ि एवं मातृभूमिकेँ बिसैर जाइए, बूझू बौर जाइए। से तँ ऐ स्कूलक बच्चामे नै होइए।”

O

चोर-सिपाही

माघ मास अन्हरिया राति। ओस-कुहेससँ हाथो-हाथ ने सुझैत। एकटा चोर चोरि कऽ भागल जाइ छल। तखने एकटा सिपाही गश्तीमे आबि रहल छल। चोर सिपाहीकेँ देखते भागल। चोर बूढ़ छल मुदा सिपाही बलंठ छलै। भागैत चोरकेँ रपैट कऽ पकड़लक सिपाही। पकैड़ हाजत लेने जाइ छल।

चोरकेँ ठंढासँ देह थरथराइ छल। मने-मन ईहो सोचै छल जे केना ऐ यमराजक हाथसँ बचब। थोड़े आगू चलि कऽ सड़कसँ हटि एकटा घूर रहै। आगि देखते चोर बाजल-

“सर, अहाँ एत्तै रहू आ हम ओइ धूरासँ कनी बिड़ी नेसने अबै छी?”

सिपाही कने सोचि कऽ बाजल-

“अरे, तूँ हमरा मूर्ख बुझै छेँ रे! आ जँ तूँ भागि जेमे तँ हम तोरा पतालमे खोजबौ? चूपचाप एतए बैस हम अपनेसँ बीड़ी सुनगेने अबै छी।”

O

इमानदारीक पाठ

ननुआँ पुछलक कनुआँसँ-

"भैया आइ-काल्हि तँ गामोक स्कूलमे बड़ सुविधा भेटै छै आ पढ़ाइओ होइ छै तैयो विद्यार्थी सभ शहरक स्कूलमे किए पढ़ै छै?"

कनुआँ जबाब देलक-

"गामक स्कूलमे इमनदारीक पाठ आ शहरक स्कूलमे रोजगारक पाठ पढ़बै छै।"

"से केना?" -ननुआँ पुन: पुछलक।

कनुआँ उत्तर देलक-

"गामक स्कूलमे एहेन पाठ पढ़बै छै जे कहुना साक्षर भऽ जाए, गाए-भैंस चराबए आ नमहर भेलापर हर-फार जोतए, खेती करए। अन्न उपजा कऽ अपनो खाए आ आनोकेँ खियाबए। ई छिऐ ने इमानदारीक पाठ मुदा शहरक स्कूलमे विद्यार्थी सभकेँ रोजगारक पाठ पढ़बै छै। ओ सभ पढ़ि-लिखि रोजगार लेल आन-आन शहर चलि जाइ छै। अपन घर-परिवार आ समाज सेहो छुटि जाइ छै।

समाजसँ बेमुख भऽ जाइ छै। आब तोहीं कह जे इमानदारीक पाठ के पढ़तै?”

O

बौआ बाजल

पढ़ल-लिखल बेरोजगार छी मुदा दिन केना कटै छल तकर कोनो सुधि-बुधि नै छल। ऊपरसँ परिवारक बोझ, आगू पढ़बाक इच्छा रहितो किछु नै कऽ सकलौं। एक दिन मनमे फुराएल जे किछु नेना-भुटकाकेँ पढ़ाएल जाए। अहुना तँ हम बुड़िआएले छी औरो बुड़िया जाएब।

एक दिन भोरमे बौआ-बुच्चीकेँ ओसारपर पढ़बै छलौं। दुनू बेरा-बेरी प्रश्न पुछए आ हम उत्तर दइ छेलिऐ। अहिना स्थितिमे बौआ पुछलक-

> “लोक एत्ते मेहनतसँ किए पढ़ैए, जे पढ़ैए सेहो आ जे नै पढ़ैए ओहो तँ एक ने एक दिन मरिऐ जाइए?”

बौआकेँ हम समझबैत कहलिऐ-

> “जीवन-मरण तँ प्रकृतिक निअम छी। ओ निरंतर होइत रहैत अछि।”

बौआ फेर पुछलक-

> “तखनो लोक किए पढ़ैए?”

> “मनुख पढ़ि-लिख ज्ञान अर्जित करैए आ ओइ ज्ञानसँ अपन जिनगीकेँ सुलभ बना असली जिनगी जीबैए। लोक पढ़ि-लिखि

डाक्टर-इंजिनियर, औफिसर, कवि, लेखक आ उपदेशक इत्यादि बनैए। अच्छा ई कहह जे तूँ की बनबऽ?”

बौआ बाजल-

“हम पढ़ि-लिख कोनो काज कऽ सकै छी मुदा कवि-लेखक नै बनब। सभ कमा कऽ सुख-मौजसँ जिनगी बितबै छैथ मुदा कवि-लेखककेँ कोनो कमाइ नै होइत छैन। अखबारमे पढ़लिऐ जे मरला बाद पुरस्कार भेटै छै।”

O

घूसहा घर

मुखियाजी पंचायतक गामे-गाम आम सभाक बैसार लेल ढोल्हो दियौलैन। गामक लोक सभ एकजुट भऽ आम सभामे पहुँचला। सभाकेँ सम्बोधित करैत मुखियाजी बजला-

> “ऐ बैसारमे सभ कियो मिल निर्णए लिअए जे पंचायतक गरीब आ मसोमात, जिनकर घर टुटल-फाटल होइ वा रहबा योग नै होइ, ओइ बेकतीक सूची बनाएल जाउ। हुनका सभकेँ सरकार तरफसँ घर बनबैले इन्दिरा-आवास योजनासँ रूपैया भेटतैन।”

वार्ड सदस्यक सहयोगसँ मुखियाजी लग इन्दिरा आवासबला सूची पहुँचल। बिहानेसँ मुखियाजीक दलाल सभ सूचीमे नामांकित बेकतीसँ भेँट कऽ एक-एकटा फार्म दऽ कहि देलक जे फार्म भरि कऽ मुखियाजी लग जमा करै जाउ आ बैंकमे खाता सेहो खोलबा लइ जाउ। संगे संग पाँच हजार रूपैआ सेहो दिअए पड़त। तखन इन्दिरा आवास भेटत।

बहुत गोटे तँ अपन गाए-महींस-बकरी-छकरी-गहना-जेबर जेकरा जे गर लगलै बेचि कऽ रूपैआ दऽ रूपैआ उठेलक। किछु आदमी एहनो छल

जेकरा सकर्ता नै भेलै ओ वंचित रहि गेल। बदलामे पाइबला लोक अपना नामे उठा लेलक।

किछु दिनक बाद रघिया मसौमात इन्दिरा-आवास ले फार्म भरि मुखिया जी लग पहुँचली। मुखियाजी फार्म पढ़ि बजला-

"पहिले इन्दिरा आवासमे पचीस हजार भेटै छलै आब चालिस हजार भेटै छै मुदा आगूसँ साइठ हजार भेटतै। जइमे पच्चीसमे पाँच हजार आ अखन चालिसमे दस हजार खर्चा लगै छै मुदा आगू साइठमे पनरह हजार लगतै।"

रधिया सुनिते कानि-कलैप कऽ अपन मजबूरी सुनौलकैन। मुखियाजी मुड़ी डोलबैत बजला-

"यइ काकी, हमरे केने नै ने होइ छै, डेगे-डेग हाकिम-हुकुम बैसल छै। ओहो तँ कटिया सोन्हा कऽ रखने रहै छै तेकरा की हेतै। आ हमरो कोनो दरमाहा भेटै छै हमहूँ तँ ओहीमे निमहै छिऐ। तँ ई हेतौ जे हम अपनबला नै लेबो।"

रधिया सभ बात सुनि परिस्थिति बूझि आपस आबि गेली।

बुधनी बुढ़िया गाममे सभसँ उमेरगर। जुआनियेमे घरबला बाढ़िमे डुमि कऽ मरि गेलखिन। दूटा बेटाक संग बुधनी कहियो हिम्मत नै हारली। संघर्ष करैत आत्म-निर्भरतापर धियो-पुतोकेँ सक्कत बनौने छैथ। हलाँकि आर्थिक रूपे कमजोरे छैथ।

एक दिन मुखियाजीक नजैर बुधनी बुढ़ियापर पड़लैन आ देखते पुछलखिन-

"गामक बहुतो लोक सभ लाभ लेलक मुदा तूँ कोनो फारमो नै भरलीही? तोरा तँ दूटा लाभ भेटतौं। एकटा वृद्धा-पेंसन आ दोसर इन्दिरा आवासक।"

बधनी बजली-

“ऐमे कोनो खर्चो-वर्चो लगैए?”

मुखियाजी-

“हँ, वृद्धा-पेंसनमे पाँच सए आ इन्दिरा-आवासमे पनरह हजार।”

बुधनी-

“हम ई लाभ नै लेब।”

मुखियाजी-

“किए नै लेब?”

बुधनी-

“घूस दऽ कऽ घर बनाएब तँ ओइ घूसहा घरमे रहैबला केहेन हेतै?”

मुखियाजी आ बुधनी बुढ़ियाक गप अपना घरक कोनचर लगसँ रधिया मसोमात सुनैत छेली अपना मनकेँ बुझबैत बजली-

“इन्दिरा आवास किए घूसहा घर कहियो ने।”

O

गंगा नहाएब

कातिक मासक पुर्णिमा लगिचाएल। सालक तेरहम मास, बेसी पावैन-तिहार भेने हाथो खालीए, मुदा गाममे दलमलित होइए- गंगा नहाइले सिमरिया घाट जाएब।

ऐबेर पुरुखसँ बेसी जनानीए सभ गंगा स्नान करए जाइले छाल छीलने। तीनू टोलक जनानी सभ गुदुर-फुसुर करैमे भरि-भरि दिन लगल। चनरदेव भोरे उठि गाए-बरदकेँ कुट्टी-सानी लगा धनखेती दिस विदा भेल कि बड़की भौजी आ सावित्री माए डेढ़ियापर आबि गेली। बड़की भौजी मुस्की मारि बजली-

> "बौआ चनरदेव, सुनै छी गामक लोक सभ गंगा नहाइले जा रहल अछि। अहाँ नइ जाएब। कहिया पुर्णिमा छिऐ।"

चनरदेव दिन-तिथि गिनैत बाजल-

> "परसुए पुर्णिमा छी। हमर तँ हाथे खाली अछि, तहन छुच्छे हाथ जाएब केना। ऐबेर नइ जाएब। गंगा मैया जँ ऐ साल निके-सुखे रखलैन तँ ऐगला साल अबस्स जाएब।"

सावित्री माए बजली-

"चनरदेव, एहनो बात लोक बजैए! गंगा नहाइले तँ बिना जतरो-के-जतरा बनबैए, अहाँ किए मुँह मोड़ै छी।"

गंगा नहाइक चर्च सुनि एक्के-दुइए जनिजाति सभ ससैर-ससैर आबि चनरदेवकेँ घेरि लेली। बड़की भौजी चौल करैत कहलखिन-

"यौ अहाँ सभ दिनक बहन्नाबाज छी, से बहन्ना छोड़ू जे हाथ छुच्छे अछि। अपनो चलू आ हमरो सभकेँ नेने चलू। रहल खर्चाक बात, हम तँ खर्चा देखबे ने करै छी। घरेसँ खेनाइ-पीनाइक समान बना लऽ लेब। रेलगाड़ीमे मेलाक भीड़ रहबे करत, टिकट कोनो लगबे ने करत। एक गाड़ीसँ रातिये-राति जाएब आ दोसर दिन घर घूमि चलि आएब। ने कोनो घरक काज पछुआएल आ मंगनीमे गंगा नहा लेब। जखन मेलामे कोनो चीज-वौस कीनबे ने करब तखन खर्च बेसी किए हएत। अहूँ तँ सियार गुँहकेँ परबत बनबै छी।"

बड़की भौजी गपक बखाड़ी खोलि चारू दिससँ चनरदेवकेँ गछारि लेली। चनरदेव सकदम भऽ गेल। किछु उत्तर नइ देलक। जनिजाति सभ समैझ गेली जे चलैले तैयार भऽ गेल।

चनरदेव मने-मन सोचए लगल जे वेद-पुराणसँ लऽ कऽ साइयो पोथीमे गंगा स्नानक बड़ पैघ महत बतौने अछि। सतयुगसँ लऽ कऽ अखन धरि अपन देशक लोक आ आनो देशक लोक गंगा नहाइए तँ चनरदेव किए पाछू रहत। हमहूँ किए ने लगले सूरमे बेड़ा पार भऽ जाइ।

एमहर भरिये दिनमे जनिजाति सभ खेनाइ-पीनाइक ओरियानमे लगि गेली। कियो अरबा चाउरक रोटी, अल्लूक भुजिया बनौलक तँ कियो परोठा-भुजिया, तँ कियो चूड़ा-मुरही, सतुआ-नोन आ मिरचाइक मोटरी बान्हि चलैले तैयार भऽ गेल।

पचीस-तीस गोटे सँझुके गाड़ी पकड़ैले टिशन दिस विदा भेल। निरमलीसँ सकरी जाइत-जाइत भीड़क कारणे बुझू देहक मोलि छुटि गेल। मुदा कोनो धरानी भोरे-भोर सिमरिया टीशन पहुँच गेल। किछुकाल टिशनेपर अँटकै गेल आ अन्हरोखे गंगा घाट दिस सभ कियो विदा भेल। टिशनसँ घाट धरि चुटी जकाँ सत्तैर लगल लोक। केतौ कनीयों जगहे नइ जे ठाढ़ो भऽ लोक जीड़ाएत।

ससरैत-ससरैत कहुना गंगा घाट पहुँच गेल। दिसा-मैदानसँ आबि चनरदेव दतमनि करए लगल। गामेसँ साहोरक दतमनि अनने छेलए। मुँह-हाथ धोय बेरा-बेरी गंगामे नहाइ गेल। चोर उचक्काक कोनो कमी नइ, जँ एकेबेर सभ कियो नहाइले जेइतए तँ झोड़ा-झंटी लऽ पार भऽ जइतए।

लोक तँ गंगा नहाइत अछि पुन्य समैझ कऽ मुदा पापो करैबला ओतए बेसी रहइ। सभ कियो नहा एक-एक डिब्बा गंगाजल भरि आनि ऊपर रखलक। पानि तेते घोर-मट्ठा भेल घिनाएल छेलै जे मुहोंमे नइ लइके मन होइत। घाटसँ हटि ऊपरमे एकटा मन्दिर छल। ओतइ एकटा चापाकल सेहो छल। सभ कियो धक्कम-धुक्का करैत कल लग पहुँचल। भूख-पियास सभकेँ लगल छेलै अपन-अपन खाएक निकाइल खा-खा पानि पीब, मोटरी-चोंटरी बान्हि लेलक।

सबहक विचार भेल जे गड़ीमे बड़ देरी छै तँए हम सभ ताबे मेला घूमि देखब। घूमि-घूमि गंगा घाटक मनोरम छबिक आनन्द लेब। सभ कियो घुमैत दछिन-पूब दिस गेल। जेतए खाली मुरदे जरै छेलै। लाश अधजरू होइ कि पानिमे धफारि-धफारि कऽ भँसा दइ छेलै। तइ बगलेमे एतेक घिनाएल छेलै जे थुको फेकनाइ अपराधे बुझै छल। नाक-मुँह मुनि सभ कियो पड़ाएल।

गंगा कातमे किछु दूर तक घाट बनल। नहाइक भीड़ ओरेबे नइ करैबला। तखन घुमैत सभ कियो राजेन्द्र पुल लग आबि गेल। जेना पुल कियो देखने नइ छल तहिना आँखि फारि-फारि पुलकेँ देखऽ लगल। घुमैत-

फिड़ैत सभ थाकि-हारि गेल। कातिकक दुपहरियाक तिखर रौद भेने गरमी बढ़ि गेल। छाहैरक कोनो असे नइ। भिजलाहा वस्त्र माथपर राखि हाथसँ पकैड़ झाँह बना-बना सभ घुरिया कऽ बैसल।

बैसले-बैसल लोक सभ गंगा महात्मक चर्च करए लगल। जेकरा जे बुझल-सुनल आकि मनमे फुराइ से बजै छल। तखने बड़की भौजी आ कुपहावाली काकीकेँ रहि-रहि कऽ मन हौंरऽ लगलैन। बोकरि-बोकरि भरली। गंगामे कखनो मरलाहा जीव-जन्तुकेँ भँसैत जाइत देखै तँ कखनो मुरदाकेँ, तहिना चारूकात जे घिनाएल देखै से परपंचे ने होइ।

चनरदेवक मनमे गंगाक प्रति श्रद्धा-भक्ति आ आस्था छल ओहो कमए लगलै। कथा-पुराण आ साधु-संतक प्रवचनमे गंगा-महात्म पढ़ने-सुनने रहए ओ साँच छी की झूठ तइ ओझरीमे ओझरा गेल। तैयो चनरदेव मनमे सवुर बान्हि सोचए- जेतए चारू जुगमे लोक गंगा-महात्मकेँ मानैत आएल छैथ, तेतए हमरा मानने वा नइ मानने की हएत। एतेक लोक जे गंगा नहाइए, की ओइ पुण्य-प्रतापे सभ स्वर्ग जाइए? आ जे गंगा नइ नहा पबैए ओ की नरक जाइए? तखन तँ केहनो कुकर्म करि लिअ आ गंगा नहा स्वर्ग चलि जाउ, सुकर्मक कोनो जरूरते नइ!

तही बिचमे सुगापट्टीवालीकेँ बड़बड़ैनी धेलकै। अकचकाइत वीरपुरवालीकेँ कहलक-

> "दीदी, एगो बात फरिछा कऽ बुझा दथु। जखन गंगा अपने एते घिनाएल अछि आ लोक सभ नहा कऽ अपन पाप धोइए तँ एतेक गन्दगी आ पापकेँ गंगा मैया केतए जमा करैए?"

वीरपुरवाली काकी सुगापट्टीवालीकेँ समझबैत कहलखिन-

> "देखै नइ छहक गंगा मैयाकेँ कोनो बखारी आकि गोदाम छै जे ओइमे जमा राखत।"

सुगापट्टीवाली-

"तखन गंगाजी अपना पेटमे सोन्हि–मोइन बना रखैत हेती।"

तैपर वीरपुरवाली बजली-

"हे हइ, एना अनरगल किए बजै छहक! गंगा मैया एहेन नइ छैथ जे एतेक रास पाप आ गन्दगीकेँ जमा करत। कथीले करत आ किए जमा करत। पाप आ गंदा तँ लोक करैए। जे करत से ने भोगत। ओ अपने ने पाप करैए आ ने गंदा। सभटा लोककेँ बाँटि दइए।"

सुगापट्टीवाली-

"से केना दीदी। एतेकालसँ छी, कहाँ किछु बँटैत देखै छी गंगाजीकेँ।"

वीरपुरवाली काकी बजली-

"हइ सुगापट्टीवाली, तोरा सनक सोझमतिया जनानी अहू जुगमे अछि से हम नइ बुझने छेलौं। एक गाममे जनमलह आ दोसर गाममे गिरथाइन बनल छहक से ओहिना। देखहक गंगा केना पाप आ गन्दगीकेँ बँटै छथिन। जेते लोक गंगा नहा कऽ पाप धोइए ओ अपना-अपना मनक भरम दूर करैए। जखन ओ डुबकी मारि डिब्बामे जल घरक खातिर भरैए, जइ जलसँ लोक तन-मन शुद्ध करैए तखने जेकर जे पाप केलहा रहै छै, तेकरा गंगा बाँटि दइ छै।"

बिच्चेमे कुपहावाली काकी आ बड़की भौजीकेँ विषयसँ भँसियाइत देख सावित्री माए बजली-

"बौआ चनरदेव, हम तँ कान पकड़ै छी एहेन करम जिनगीमे फेर कहियो ने करब। ई तँ देखौंस केलौं। असल गंगा तँ सबहक मनेमे बसैए। जे कियो देखबे ने करैए। कहबियो छै, मन चंगा तँ

> कठौतीमे गंगा। रहल गंगा नहा कऽ पाप धोअब आ पुण्य लूटब। तँ जखन पाप करबै ने करब तँ पुण्यक कोन काज अछि। जखन करमकेँ धरम बूझि करब तखन अधरम किए हएत। जे जेहेन करत तेकर फलो तँ तेहने ओकरा भोगए पड़त। हमरा बुझने ई सभटा मनक भरम छिऐ।"

गप-सप्पक बीच दुपहरिया बितल कि तखने घर जाइले गड़ी धुधुआइत आबि गेल। सभ कियो गड़ीपर चढ़ि विदा भेल। टिशनसँ चलि जखन गामक सीमा कात आएल तखने सभ कियो तीन-तीन बेर गंगाजी केँ गोड़ लागि बाजल जे एहेन दिन नइ करिहह जे दोसर बेर आब कहियो गंगा नहाइले जाए पड़ए। कान पकैड़-पकैड़ जिनगी भरिक लेल गंगाजी सँ माफी मांगि लेलक।

O

शिक्षाक महत

जीबछ घरजमैया छल। हुनकर पत्नी रधिया, माए-बापक एकलौती बेटी बड़ दुलारि छलि। रधियाक पिताकेँ चारि बीघा चास-बास, कलम-बाँस आ गाए-बड़द छल। खेती-बाड़ीसँ जिनगी चलै छेलैन। सोझमतिया रहने कोनो छल-कपट नै रहैन। पितमरू छला। परिवारमे अक्षरक बोध केकरो नै रहैन खाली जीबछ ट-ब कए कऽ साक्षर छल। रधियाक पिता जरूरत पड़लापर जखन समाजमे कोनो लेन-देन करै छला तँ औंठेक निशान दइ छला।

एक साल एहेन समए भेलै जे इलाकाक इलाका बाढ़ि-पानिसँ दहि गेलै। ने नेवान करैले अन्न आ ने दाँत खोदहैले नार-पुआर भेलै। दोसर साल रौदी भऽ गेलै। एक तँ बाढ़िक मारल, दोसर रौदीक जरल। गरीब-गुरबाकेँ गुजर कटनाइ पहाड़ भऽ गेलै। केतेको परिवार तँ आन-आन गाम अपन-अपन कुटुमैती जा किछु दिन समए कटलक। मुदा ई सुविधा सबहक नशीव नै छेलै। गामक नमहर जमीनदार, मालिक-गुमस्ता जे छला हुनका तँ पहुलके सालक पुरना अन्न बखारीक-बखारी भरल छेलैन। हुनका सभकेँ कोनो चिन्ता नै छेलैन। रधियाक माए-बाप बूढ़ रहने आन गाम जा केना काज करत। ओ दुनू गामेमे मालिकसँ कहियो मरूआ तँ कहियो धान तँ

कहियो छाँटी चाउर कर्जा लऽ समए काटै छल। कर्जा देनिहार मालिक सभ विपतिक समैमे गरीबक शोषण सेहो करैत। एक मन अन्नक बदला दू मन आ दोसर साल चुकेलापर तीन मनक करारीपर कर्जा लगबैत। तेकर बादो औंठाक निशान एकटाकेँ के कहए जे तीन-तीनटा छाप कागतपर लइ छेलखिन। गरीब अपन परान बँचाएत आकि छापक परबाह करत। कर्जा खेनिहार थोड़े बुझै छल कि छाप देबै कागतपर आ हमर जमीन जत्था चलि जेतै तक्खापर।

एक दू साल समए बितलै। जीबछ अपन सोसराइरेमे सासु-ससुरक सेवा आ खेती-बाड़ी कऽ गुजर-बसर करै छल। किछु समए पछाइत सासु-ससुर मरि गेलखिन। श्राद्ध-कर्मसँ निवृत भेले छल आकि गामक मालिक-गुमस्ता लोकैन अपन-अपन कागत लऽ जीबछ ऐठाम पहुँचए लगला। कर्जा तँ करारीपर देने रहैन। ओ समय बीति गेल छल। कर्जा खेनिहार पहिले कागतपर छाप देने रहैन। ओइ कागतपर मालिक-जमीनदार लोकैन जमीनक खाता-खेसरा रकबा लिखि कऽ अपन नाओं कऽ लेलैन। गरीब सबहक जमीन मालिक-गुमस्ता हरैप लेलकैन। जइमे रधियाक जमीन सेहो चलि गेल। आब जीबछ-रधियाकेँ दूटा बेटी, एकटा बेटा आ परिवारक भरन-पोषण करनाइ कठिन भऽ गेल। जीबछ कमाइ खातीर बाहर चलि गेल। बाहरमे पढ़ल-लिखल आदमीकेँ नोकरी जल्दीए होइ छेलै आ बेसी दरमाहा सेहो भेटै छेलै। जीबछ बेसी पढ़ल तँ नै मुदा साक्षर छल। जइसँ शिक्षाक महत जिनगीमे केतेक होइ छै से मोने-मन महशूस करै छल।

जीबछ ट-ब-ट काए कहुना कऽ चिट्ठी लिखि घर पठेलक। ओइमे बेटा-बेटीकेँ पढ़बैले रधियाकेँ प्रेरित करैत कहै छल जे पढ़ाइमे जेते खरच लगत, हम कमाए कऽ पठाएब मुदा अहाँ धिया-पुताकेँ पढ़बैमे कोनो कोताही नै करब। रधियो मोने-मन सोचै छेली जे नीक लोक बनबाक लेल शिक्षाक

बड़ महत छै। जे हम आ हमर माए-बाप जँए नै पढ़ल छेलौं तँए ने सभटा जमीन मालिक-गुमस्ता हरैप लेलैन। जखन पढ़ल रहितौं तँ ई मुसिबत नै अबिताए। हम सभ जे केलौं से केलौं मुदा धिया-पुताकेँ जरूर पढ़ाएब। अइले हमरा जे परिश्रम आ तियाग करए पड़त ओ करब। ओ सभ दिन अपन धिया-पुताकेँ समैपर संगे जा स्कूल पहुँचाबए लगली।

रधियाक टोलेमे बुच्ची बाबू छला। बुच्ची बाबू अंचलमे बड़ाबाबू छैथ। छुट्टीमे घर आएल छैथ। हुनका काल्हि भोरे ट्रेन पकैड़ ड्यूटीपर जेबाक छेलैन से रधियाकेँ कहलखिन-

> "रधिया, किछु समान अधिक अछि। गाममे कएक गोटेकेँ कहलिऐ जे काल्हि भोरके ट्रेन पकड़ब से कनी समान स्टेशनपर पहुँचा दिअ, मुदा कियो तैयार नै भेल। तूँ कनी पहुँचा दइ। हम तोहर बड़ उपकार मानबो।"

रधिया बाजलि-

> "ठीक छै, कअए बजै चलब। कहि दिअ हम समान पहुँचा देब।"

बुच्ची बाबू बजला-

> "सात बजे भोरेमे चलब। किएक तँ आठ बजेमे ट्रेन छै। तीन-चारि किलो मिटर स्टेशन दूरो छै।"

रधिया भोरे उठि सभ काज कऽ जलखै बना धिया-पुताकेँ खाइले दऽ बजली-

> "तूँ सभ जल्दीसँ खो, आइ कनी पहिनहिये तोरा सभकेँ स्कूल पहुँचा दइ छियौ, तखन बुच्ची बाबूक समान पहुँचबैले टीशन जाएब।"

एम्हर बुच्ची बाबू तैयार भऽ रधियाक बाट तकै छला। पाँच मिनट पछाइत रधिया पहुँचली। बुच्ची बाबू तमसाइत बजला-

"रधिया, तोरा कहने छेलियौ साते बजै चलैले, देरी भऽ गेल। ट्रेन छूटि जाएत। तोरा कोनो चिन्ता नै।"

रधिया बजली-

"अपने तमसाउ नै। धीरे-धीरे बढ़ू हम समान लेने लफरल पिट्ठेपर आबि रहल छी। कनी धिया-पुताकेँ स्कूल पहुँचबैमे देरी लागि गेल।"

बुच्ची बाबू-

"पहिले समान पहुँचा दइतैं, हमरा ट्रेन छूटि जाइत। एक दिन तोहर बेटा-बेटी स्कूल नै जेतौ तँ की हेतै। एक्के दिन कोनो पढ़ि कऽ कलक्टर बनि जेतौ?"

रधिया मोने-मन सोचए लगली, कहै छिऐन आगू बढ़ैले से उठिए ने होइ छैन। हम तँ लफरल हिनकासँ पहिनहि पहुँच जाएब। ट्रेन थोड़े छुटतैन। अपने बेगरते आन्हर छैथ। अनेरे गछलौं।

O

ई छी हमर मजबुरी

जमुना बाबाक दुआरिपर सतसंग-प्रवचन होइ छेलै। भीड़ देख हमहूँ ससैर कऽ गेलौं आ बैस सुनए लगलौं। प्रवचनकर्ता सेहो ज्ञानी आ विद्वान बूझि पड़ला। ओ मनुखक जिनगीक समरूपता बतबै छला। कहब रहैन जे सभ मनुख एक समान छी। सभ एके ईश्वरक सन्तान छी आ सबहक अत्मामे एके परमात्माक अंश रमि रहल-ए।

मुदा हम तँ बड़ अन्तर देखै छी। सबहक क्रिया-कलाप, रहन-सहन आ खानो-पानमे बड़ पैघ भिन्नता अछि। केकरो बोरे-बोरे नून आ केकरो रोटियोपर ने नून। कोइ खाइते-खाइते मरैए आ कोइ खाइए बिनु मरैए। केकरो बीघा-बीघे कोठा-सोफा केकरो खोपड़ियोपर आफत। कोइ रौदे-वसाते जरि-मरि काज करैए तँ कोइ ए.सी.मे मौज करैए। कियो उड़न जहाजसँ देश-विदेशक यात्रा करैए तँ कियो पएरे चलि-चलि सड़केपर पराण तियागैए। किनको बिमारीक इलाज करोड़ो रूपैआसँ विदेशमे होइए तँ किनको पराण साधारण इलाज बिनु चलि जाइए।

ऐ सभ मुद्दापर सोच-विचार करैत जखन प्रवचन खतम भेल तखन हम हुनका लग जा कहलिऐ-

"महराज, अपने प्रवचनमे सभ मनुखकेँ समरूप बतौलिऐन। मुदा हम तँ बड़ अन्तर देखै छी। से कनी फड़िछा कऽ कहियौ।"

प्रवचनकर्ता मधुर स्वरमे बजला-

"से तँ ठीके अहूँ कहै छी। हम जे प्रवचनमे कहलौं सेहो ठीक आ अहाँ जे कहै छी सेहो ठीक। सत् ई छै प्रकृति द्वारा जे सुविधा मनुखक लेल उपलब्ध छै ओ समरूप छै। मुदा मनुखक बीचमे जे अन्तर छै से अन्तर बेवस्थामे कमीक कारणे छै। मनुखे मनुखक दुश्मन छिऐ। जे जेते सवल छै ओ ओते दोसराक हक मारि बेवस्थाकेँ दुरूपयोग करै छै। जहिना हाथीकेँ दूटा दाँत होइ छै एकटा खाइबला आ दोसर देखबैबला तहिना बेवस्था करैबलाकेँ दू नजैर होइ छै। कथनी आ करनीमे अन्तर रखने छै। ऐ सभ बातक विचार-अनुभव मनुखकेँ अपने करए पड़तै। ओकर समाधान लेल सघर्ष करए पड़तै। बिनु मांगने तँ भीखो नै मिलै छै। ई तँ अहाँ अधिकारक बात करै छी। जौं हम प्रवचनमे समरूपताक बात नै कहबै तँ बेवस्था हमरा नै ने जीबए देत। अहाँ जकाँ जौं हमहूँ प्रवचनमे बाजब तँ कहिया ने हमरा जमपुरी पहुँचा देने रहितए। यहए छी हमर मजबूरी।"

O

बाल बोध

दुखीलालकेँ दुखक पहाड़ माथसँ कहियो निच्चाँ नै भेल। बूढ़ माए-बापक सेवा टहल, तैपर सँ दूटा भलढ़ेरबा बेटी, छोट-छोट दूटा बेटा, पत्नी आ अपने कुल आठ बेकतीक परिवार। पत्नी- फुलिया- परिवारक काजमे पिसाइत छेली। सासु-ससुरक टहल-टिकोरा आ सेवासँ पलखैते ने। ऊपरसँ एकटा पोसिया गाए, एकटा भजैतिया बरद। मुदा दुनू बेटी चठेलगरि आ हुनरगरि छैन। घरक कमौआ दुखीलाल असकरे दिन-राति फिरिशान रहैए। घरक खर्चा पुग्बे ने करैए जे पलखति मारत। खेतियो-पथारी कम्मे भेने जने-बुत्तापर घरक खर्चा चलैत अछि। जखन खेनाइओ-पीनाइओमे ढनसने तखन बेटा-बेटी पढ़त केना? बर्खक पेसतरे दुखीक माए लकबा रोगसँ मरि गेली। पछाइत बूढ़ बाप सेहो रोगसँ रोगा-सोगा दम तोड़ि देलकैन। श्राध-कर्म आ भोज-भात कर्जे हाथे भेल।

दुखीलालकेँ एक-सबा कट्ठा डीह, तीन कट्ठा चौमास आ छह-सात कट्ठा तीन-फसिला खेत छैन। जइसँ छह मास परिवारक गुजर चलै छैन। जन-मजदूरी कऽ शेष छह मास बितबैत अछि। मुदा अखन तँ चौमास आ तीन-फसिला खेत दस हजारमे डेढ़ा सूदिपर भरना लगि गेल अछि। तैपर सँ दूटा बेटीक बिआहक अलगे। दुनू बेटा अखन बाल-बोध! समस्या-पर-समस्या लदल जा रहल अछि। जँ चारि-पाँच साल खेत-भरना रूपैआक सूदि

नै भरब तँ खेतो सूदिए तरे चलि जाएत। गाए बिकल चरबाहियेमे कहबी सन हएत।

एक दिन दुखीलाल बैसारीए छल। किछु सोचैत छल आकि मनमे उपकलै खेतक भरना। जइ खेतसँ हमर बाप-दादा परिवार चलबै छला वएह खेत हमरो जीविका अछि। मुदा आब बूझि पड़ैए ओ खेत बिलैट जाएत। ऐ क्रममे सोचैत दुखीलाल टहैल मालिक प्रभूनाथजीक दरबज्जापर पहुँचल। प्रभूनाथजी दुखीकेँ देखते कहलखिन-

"आबह दुखी, एमकी बहुत दिनपर भेँट करए एलह।"

दुखीलाल-

"मालिक, अहाँसँ कथी छुपल अछि। एतेक दिनसँ माए-बापक कहुना रीन उतारलौं मुदा अपनेक रीन केना चुकाएब से फुड़ेबे ने करैए।"

प्रभूनाथजी-

"केना चुकेबऽ से तँ तोहर काज छिअ। तइले हम किए मगजमारी करब। साले-साले हमरा रूपैआक डौरहा सूदि बढ़ैत जेतह। पाँच सालक कराड़ी छह, नै चुकेबहक तँ खेत छोड़ह पड़तऽ।"

दुखीलाल-

"मालिक, एना नै ने बाजू। खेतक नाओं सुनि हमर करेजा फाटि जाइए। ई खेत हमर खनदानक पूजी आ इज्जति छी। अपना जीबैत हम केना बिलटए देब।"

प्रभूनाथजी-

"से तँ तूँ ठीके कहै छह। रूपैआक सूदि जोड़ि चुकता कऽ दहक आ अपन खेत छोड़ा लैह।"

दुखीलाल-

“मालिक, अहींक दरबारमे जन-मजुरी कऽ जीब लेब। रहल अहाँक रूपैआक सूदि, तइ एबजमे हम अपन दुनू बेटाकेँ अहीं ऐठाम नोकरी राखि दइ छी। बँचलोहो बासि-बेरहट खा जीब लेत आ अहूँक काज चलत। जाधरि अहाँक रूपैआक सूद-मूर नै सधत ताधरि अहींक दरबारमे नोकर बनि खटि देत। रूपैओक चुकता भऽ जाएत आ हमरो खेत छुटि जाएत।”

प्रभूनाथजी-

“कहलह तँ बड़ नीक। युक्तियो तोहर नीमन छह मुदा... ।”

दुखीलाल-

“मालिक ‘मुदा’ किए कहलौं?”

प्रभूनाथजी-

“मुदा ऐ दुआरे बजलौं कि तोहर बेटा दुनूकेँ तँ देखने नै छी। अबोध अछि आकि बाल-बोध ”

दुखीलाल-

“बाल-बोध अछि। ठेकनगरि, एकबेर सेरिया कऽ बता देबै तँ दोसर बेर अढ़बए नै पड़त। देखते-देखते फुर्र-फुर्र काज कऽ देत। एक्को मिसिया असकतिया नै अछि।”

प्रभूनाथजी-

“बेस काल्हिये दुनूकेँ बजौने आबह। नैनसँ देखियो लेब आ काज करै जोकर अछि कि नै सेहो ठेकाइन लेब।”

दुखीलाल-

"बेस मालिक, जाइ छी काल्हिये दुनूकेँ संगे नेने अबै छी।"

दुखीलाल अपन कर्तव्यकेँ हीन बूझि चिन्तामे डूमि गेल। हम केहेन बाप छी जे बाल-बोध बेटाकेँ भोजन-बस्त्र-शिक्षा इत्यादि पूर नै कऽ अपने बेगरते नोकरी लगबै छी। बेटा-बेटी राजाक हुअए आकि गरीबक सभकेँ अपन सन्तान दुलरूआ होइ छै। जखन नमहर-बुधिगर-ठेकनगर हएत तँ की कहत! हमर बाप केहेन निष्ठुर छैथ जे हमरा संगे एहेन अन्याय केलैन। मुदा हमरा लग रस्ते कोन अछि। दोसर कोन उपए लगा सकब। मोनक बात मोनमे रखैत हृदैकेँ सक्कत कऽ बिहाने भने पनिपिआइ करा संगे नेने प्रभूनाथजीक दरबार पहुँचल। दुनू बाल-बोध भाए गांगी-जमुनी, देखैओमे बड़ नुनुआगर, उमेरो आठ-दस बर्खक। प्रभूनाथ जीकेँ मनमे भेलैन बड़ नीमन टहलू हएत। मुदा अनठबैत बजला-

"दुखी दुनू बौआ तँ अखन लेधुरिये अछि। हमरा ऐठाम कोन काज करत। ऐठाम तँ भीड़गर काज अछि।"

दुखीलाल बूझि गेल जे मालिक हमरा टाड़ि रहल अछि। बाजल-

"मालिक, छोट देख झुझुआउ नै। घरक छोट-छोट सभ काज करत। गाए-बरदक कुट्टी-सानी, दरबज्जा, माल-जालक बथान आ गोहाल घरक झार-बहार करत। गोबर-करसी ढुल-ढालकेँ हटाएत। अहूँकेँ कियो टहल-टिकोरा करैबला नै अछि सेहो अपन समैझ करत। अहूँ अपने पोता सन बेवहार करबै। घरे ने बदैल जेतै मुदा रहतै तँ गामेमे। अहाँ लग रहत तँ हम निफिकिर रहब। ओना हमहूँ तँ अबिते-जाइते रहब।"

प्रभूनाथजी-

"दुखी, तूँ ने गाम-घरक बात करै छह। लोक तँ शहर जाइले जान गमौने अछि।"

दुखीलाल-

"मालिक की कहब, लोक तँ चिड़ै भऽ गेल अछि। जेतै पेट भरै छै ओतै खोंता बना रहैत अछि।"

प्रभूनाथजी-

"से ठीके। हमरे बेटाकेँ नै देखै छहक। गाम-समाज छोड़ि हैदराबादमे रहैए। पावैन-तिहार तँ हम जाबै जीबै छी ताबे कहुना कऽ दइ छिऐ, नै तँ घरक देवताकेँ एक चुरुक पानियोँ के देत।"

दुखीलाल-

"मालिक, छोड़ू दुनियाँ-दारीक गप-सप्प। हमरो काजपर जाइक अछि। और गप-सप्प दोसरो दिन हेतै। दुनू बाल-बोधकेँ सम्हारू।"

प्रभूनाथजी-

"दुखी, कनी आर बैसह। ई दुनू बौआ अनचिन्हार अछि। कनी बतिया लइ छी। नाओं बूझल रहत तँ समैपर समझा-बुझा देबै। नै तँ पोसो नै मानत। तूँ तँ बुझबे करै छहक जे हमरासँ दुनू बौआकेँ खटपट तँ नै हएत मुदा हमर बुढ़ियाक सोभाव आ बेवहारकेँ तँ तूँ नीकसँ जनै छह, ओ मक्कै लाबा जकाँ दिन भरि फटफटाइते रहै छैथ। तेहेन झनकाहि अछि जे केकरोसँ पटरीए ने खाइ छै। दिन-भरि पूजे-पाठमे लगल रहैए, दिनक भोजन राति आ रतुका भोरमे पाड़न करैए। जँ कियो लागियो-भीरियो देतै तँ कहत जे हमर सभ किछु छुबा गेल। एकबेर के कहए जे तीन-तीन बेर नहाएत आ गंगाजलसँ शुद्ध करत। बेटो-पुतोहु आ पोता-पोती जखन अबैए तँ

देखते बनरनी जकाँ लड़िते रहैए। तखन हमर जिनगी केहेन अछि से बिनु कहने बूझि गेल हेबह।”

दुखीलाल-

“मालिक, ई तँ घरक बात छी। ओइमे हम किए दखल देब। मनुखो कोनो एक्के रंगक होइए। लोक अपन सुख-दुखक सृजन अपने करैए। अपजश दोसरकेँ लगबैए।”

बात समटैत दुखी दुनू बाल-बोधक दिस इशारा केलक।
प्रभूनाथजी पुछलखिन-

“बौआ, नाओं की छिअ?”

दुनू भाँइ एक्के स्वरमे अपन-अपन नाओं बाजल-

“बुधन-बेचन।”

प्रभूनाथ-

“मुँह सूखल छह। किछु खेबह?”

दुनू भाँइ बाजल-

“नै, पनिपिआइ कऽ लेने छी।”

प्रभूनाथजी-

“तोहर बापक कहब अछि जे दुनू भाँइ अहीठाम काज करत से करबहक ने?”

बुधन-

“हँ।”

प्रभूनाथजी-

“अपन काज कहुना सभ करैए मुदा बीरानक काज कियो करैए आ कियो नै करए चाहैए।”

बुधन-

“हम अपन आ बीरानमे अन्तर नै बुझै छी। काज करब।”

दुखीलाल बूझि गेल जे बात बढ़ि जाएत। बातकेँ सम्हारैत बाजल-

“मालिक गरीबक बेटाकेँ कथी परीक्षा लइ छिऐ। जे कहबै से करत। अबेर भऽ गेल काजपर जाइ छी।”

प्रभूनाथजी-

“कनी दरमाहा फरिआ लैह जे पछाइत कोनो मुहाँ-ठुठी ने हुअए।”

दुखीलाल-

“मालिक, दरमाहा की हेतै। अहाँसँ रूपैआ दस हजार नेने छी। सालमे पनरह हजार हएत। पँच-पँच सए रूपैआ महिनाक हिसाबसँ दुनू भाँइक एक हजार भेल। पनरह महिनामे अहाँक रूपैआ फरिया जाएत, नै मानब तँ एक मास बेसीए खटि देत। हमरो खेत छूटि जाएत। ने अहाँकेँ दिअ पड़त आ ने हमरा। दुनू भाँइ अहींक दरबारमे खाएत-पीअत काज अहाँक अनुकूल करत।”

प्रभूनाथजी-

“ठीक छै मानि लेलिअ। तूँ तँ हमरोसँ तेज निकललह। हम तँ बाल-बोधक फेरमे अबोध बनि गेलौं।”

O

अबिसवास

काल्हिये नूनू बाबूक बेटीकेँ बिआह छी। नूनू बाबू बिआहक सरमजान सबहक ओरियानमे लगल छला। गिरहत आ सम्पन्न परिवार रहितो रूपैआक अभाव छेलैन। चारि लाख टाका, पाँच भरि सोना आ एकटा मोटर साइकिल देहेजपर बिआह फाइलन भेल छल। दुलहा इंजीनियरिंग कौलेजक छात्र। सुखी सम्पन्न परिवार। दुलहाक पिता मोहन बाबू एस.डी.ओ. औफिसक बड़ाबाबू। नीक कमेने-खटेने छैथ। तँए नूनू बाबू अपन बेटी सुचिताकेँ हुनके घरमे कुटमैती करैक निर्णए नेने छैथ।

नूनू बाबू बहुत परियास करैत तीन लाख रूपैआ मोटर साइकिल, दू भरि सोना तिलकक समैमे चुकता कऽ देलैन। शेष तीन भरि सोना बेटीक गहना स्वरूप बिआहे दिन देब आ एक लाख रूपैआ जे बँकियौता रहि गेल ओ बेटीक नामे एल.आइ.सी. बीमामे जमा अछि। जे दू तीन मास पछाइत मिलत सेहो चुकता कऽ देब। तिलक भेला पछाइत बिआहक दिन ठेकल गेल। मुदा दुलहाक पिता मोहन बाबू बड़ लोभी। ओ मोने-मोन सोचलैन, पुतोहु जखन हमर हएत तँ एल.आइ.सी.क रूपैआ आइ ने काल्हि हमरे हएत। बँकियौता रूपैआ बिआहसँ पहिने लऽ लेब तँ लाभमे रहब। मोहन बाबू बिआहसँ एक दिन पहिने समाद नूनू बाबूक घर पठौलैन जे हमर एक

लाख टाका बँकियाहा अछि ओ रूपैआ चुकता करि दिअ तखने बरियाती जाएत नै तँ अहाँ जानू। नूनू बाबूकेँ समाद सुनिते जेना देहपर बज्जर खसि पड़ल। ओ सोचमे पड़ि गेला। होश सम्हारि मोहन बाबूसँ भेँट कऽ बड़ विनती केलैन। अखन ऐ लेल माफी दिअ। हम बेटीबला छी। बहुत चीज-बौसक ओरियान करए पड़त। तैपर सँ बरियातीक सुआगतमे सेहो बहुत खरच हएत। मुदा मोहन बाबू नूनू बाबूकेँ एकोटा बात नै सुनलकैन, आ ने आँखिक नोर पोछलकैन। तखने नूनू बाबू बजला-

> "खैर, नै मानब तँ अहाँ बरियाती लऽ कऽ आउ, हम दरबज्जेपर बिआहसँ पहिने रूपैआ बरियातीए घरमे चुकता करि देब तखन बिआह करब।"

नूनू बाबू खेत भरना रखि रूपैआक ओरियान केलैन। बरियाती समैपर आएल। सबहक सुआगत भेल। दरबज्जेपर सबहक सोझहेमे एक लाख टाका दुलहाक पिता- मोहन बाबूकेँ चुकता कऽ देलैन। दुलहाक परिछन भेल, वरमालाक काज शुरू हएत तखने एकटा नव बातक चर्चा भेल जे दुलहा पहिने दुलहिनकेँ देखता। पसिन भेला पछाइत ने बरमाला आ सेनूरदान हएत। ऐ बातसँ कन्याँ पक्षमे खलबली मचि गेल आ आक्रोश सेहो बढ़ि गेल। अन्तमे निर्णए भेल जे ठीक छै पहिने कन्याँ देख लेल जाउ। तखने आगूक काज हएत।

दुलहिन चित्रा तँ पहिनेसँ वरमाला लेल सजले छलि। एकटा कोठलीमे दुलहाकेँ लोकनियाँ संगे बजौल गेल। ओही कोठलीमे दुलहिन चित्रा सहेलीक संगे आएल। चित्रा इण्टर पास पूर्णिमाक चान सन सुन्नरि। दुलहा देख कऽ मोने-मोन खुश भेला। किछु गप-सप्प सेहो भेलै। तखने चित्रा बजली-

> "की यौ दुलहाजी, हम अपनेकेँ पसीन भेलौं?"

दुलहा मुस्की मारि पीठे लागल बजला-

"हँ, की हमहूँ अहाँकेँ... ।"

चित्रा तुरन्ते जबाव देलक-

"नै अहाँ हमरा पसीन नै छी। तँए आब ई बिआह हम किन्नौं ने करब। चित्राक ई निर्णए सुनि सखी-बहिनपा, माए-बाप, समाजक बुजुर्ग इत्यादि बहुतो गोटे समझेलकैन मुदा एकेठाम चित्रा जिद्द धेने रहलि जे ऐ वरसँ हम बिआह नै करब।"

दरबज्जा बरियाती-सरियातीसँ भरल छल। ई बात लगले सनसना कऽ अगिलग्गी जकाँ चारू दिस सौंसे गाम पसैर गेल। बहुतो बुजुर्ग लोकैन दुलहिनक पिताकेँ बुझा-समझा कऽ कहलकैन मुदा चित्रा अपन दृढ़पर अड़ल रहल। चित्रासँ कारण पूछल गेल। कहलक-

"जखन दुल्हाकेँ अपन माए-बाप आ सर-समाज किनकोपर बिसवास नै छैन तँ ओ हमरापर बिसवास केना करता आ हम केना हुनकापर बिसवास करब। दोसर बात जे हिनकर पिताजी दहेजक खातिर जमीन आ इज्जत बेचबा सकै छैथ तखन ओ हमरो बेचि सकैत छैथ किने। तँए हम बीख पीब मरि जाएब मुदा एहेन अविसवासी आ दहेज रूपी दानवक बेटा संगे बिआह नै करब। ऐसँ नीक तँ हम ओहेन दुल्हा जे गरीबे किएक ने हएत, तिनकासँ करब, जे अपन इज्जतक संगे दोसरोक इज्जत करत।"

चित्रा सहेली संगे कोठलीसँ निकैल गेलि। दुल्हा आ लोकनियाँ सभकेँ ओही कोठलीमे बन्न कऽ ताला लगा आँगन आबि गेलि। बिआह नै भेल। ई खबैर रातिये भरिमे चौतरफा पसैर गेल। पंचैतीक बैसार भेल। पंच लोकैन

बिआह हेबाक बहुत परियास केलैन मुदा चित्रा अपन संकल्पपर अडिग रहलि। अन्तमे जे दहेजक लेन-देन आ सुआगतक खर्च भेल रहै ओ सभटा आपस भऽ जाए। दुलहिनक पिता नूनू बाबू बजला-

> “चारि लाख टाका, दू भरि सोना, मोटर साइकिल संगे सुआगतमे दू लाख टाका खर्च भेल अछि से सभटा आपस कऽ दिअ तखने हिनका सभकेँ छुट्टी भेटतैन। नै तँ हम कानूनक शरण लेब आ दुनू बापूतकेँ जहल कटेबैन।”

सभ पंचक विचार भेलैन। बात तँ उचिते ने नूनू बाबू कहै छैथ। कोनो जबरन जुर्माना तँ नै...।

दुल्हाक पिता मोहनबाबू छह लाख टाका, सोना, मोटर साइकिल घरसँ मंगबा नूनू बाबूकेँ पंचक बिच्चेमे आपस कऽ देलकैन। तखन हुनक बेटाकेँ कोठलीसँ बाहर निकाइल देल गेल। जहिना आन गामक चोटाएल कुकुर नांगैर दबौने दुलकी दैत अपन गामक बाट पकैड़ सोझहे-सोझ जाइत रहैए तहिना सभ कियो विदा भेला।

चित्रा पिताक मुरझाएल मुँह देख बाजलि-

> “बाबूजी, अहाँ एक्को पाइ चिन्ता नै करू। हम मनुख संगे बिआह करब। पढ़ल-लिखल कम्मो रहत तइले एको पाइ चिन्ता नै। एही खातिर ने एते झमेल होइए। एक्को पाइ चिन्ता नै करू।”

O

जातिक भोज

आइ फूलबाबूक बेटाक बिआहक भोज अछि। गौआँ सभकेँ आशा छेलैन जे ई भोज हमरो सभकेँ खेबाक अवसैर भेटत। किएक तँ ऐ भोजकेँ सफल बनेबाक लेल बहुतो जाति-वर्गक लोकक सहयोग छेलैन। कियो जारैन फारए तँ कियो साफ-सुथरा करए। कियो बरतन-बासन माजै छल। गामक डोम बाँससँ बनल छिट्टा-पथिया, ढकैस, डाल-दौरा, चङेरा बना देलक।

मालि फूल आ फूलक माला, कुमहार वर्तन-वासन, महला पोखैरसँ माछ मारि मनक मन ढेर लगौलक। कतेको करीगर आ हलुआइ सभ भोजक समग्री बनबैमे भिरल छल। भोजमे सहयोग तँ सभ जातिक लोक द्वारा भेल। मुदा खाइक अवसर सभकेँ नै भेटलैन। ओतबे नै, किनको नगद टाका देल गेल तँ किनको उधार रहलै आ किनको सीदहा भेटलै। मुदा भोज खाइक नोत सभकेँ नै भेटलै।

भोजक आयोजक भलेँ फूलबाबू छला मुदा करबारी तँ सभ जातिक लोक छेलखिन। किछु लोकक मनमे, जिनका सभकेँ नोत नै देल गेलैन। हुनका सबहक मनमे ईहो होइन जे काज जखन नै छुआइ छै तँ पाँतिमे बैस खेलापर पाँति केना छुबा जेतै।

भोज बड़ नीक। समानो सभ एक-पर-एक उत्तम आ स्वादिष्ट बनल अछि। जे खेलक ओ सभ प्रशंशा करैत नै थाकए। मुदा जे नै खेलक ओ कहै- जे भोज ने खाएब तइमे पारा मरि जाए। भोज तँ सम्पन्न भेल मुदा एक जतिया-भोज भेने भोजक बनल समानो ढेरक-ढेर उगैर गेल। फूल बाबू सोचए लगला जे एहेन महग आ स्वादिष्ट भोज्य-पदार्थकेँ केना फेकब। तखने मनमे एकटा विचार आरो एलैन। फेकब नै गरीब लोक, छोटहा लोक सभकेँ बजा खुआ देब आ बाँटियो देब। जँ से नै करब आ फेक देब तँ कुकुर-भोज भऽ जाएत।

सोच-विचार करैत फूल बाबू निर्णए लेलैन आ नौकर- झगरू-केँ बजा कहलखिन-

> "गामपर जा गरीब, छोटहा सभकेँ कहि देही जे भोजक समान बेसी बँचल अछि से आबि लऽ जाउ।"

झगरू गामपर जा गरीब-छोटहा सभकेँ कहलक मुदा ओ सभ बँचलहा भोजक समान लइसँ इनकार कऽ देलक। किछ लोक तँ मुहेँपर कहियो देलकै जे काज करबै बेरमे हमरा सभसँ छुबेबे ने करै छैथ आ खाइ बेरमे छुबाइ छैथ तँ अपन भोज अपने खौथ। बँचलाहा बसिया-तेबसिया आ आँठि-कुठि हम सभ किए लेब।

झगरू गामपर सँ घुमि आएल, मालिक फूल बाबूसँ बाजल-

> "गामक गरीब छोटका सबहक कहब अछि जे हम सभ छोटहा छी तखन भोज केना खाएब, अहाँक भोज छुबा जाएत। तँए भोजकेँ उचगरे लोक-ले रहए दियौ आ भोजक समानो लइसँ इनकार कऽ देलक।"

झगरूक बात सुनिते फूल बाबूकेँ माथ चकरा गेलैन। चक्कर काटैत झगरूकेँ कहलखिन-

"जाउ राही-बटोहीकेँ बजा-बजा खुआ दियौ। कौआसँ खैर की लुटाएब।"

झगरू दू-तीन गोरेकेँ संग कऽ राही-बटोहीकेँ बजबए चलि देलक। कहला-सुनला पछाइत किछु लोक एबो कएल आ किछु नहियोँ आएल। एकटा बुढ़बा बटोही माथपर सनेसक मोटरीकेँ अंठेका मारने लफरल अबै छला। समए कम आ दूरी बेसी रहने दुलकी चालिमे चलैत आगू बढ़ैत रहैथ। जखन फूल बाबूक घरक कात बाटे जाइ छला कि फूल बाबूक नजैर बुढ़बापर पड़लैन। नजैर पड़िते बुड़हा बटोहीकेँ अबाज देलखिन। लग अबिते पुछलखिन-

"नाओ की छी, केतए जाएब?"

बुढ़बा बटोही कहलकैन-

"हमर नाओं फुसन छी, बड़ दूर बेटी लग जा रहल छी।"

फूल बाबू फुसनकेँ भोज खाइक आग्रह केलखिन। तैपर फुसन ठेकाइन कऽ बजला-

"हम तँ बटोही छी, दूर जाए पड़त। तहूमे हम ने तँ नौतल पंच छी आ ने अहाँक जाति-कुटुम छी तखन कोन विचारपर हम अपनेक भोज खाएब।"

फूल बाबू बजला-

"बातक बखेड़ामे की पड़ब, आग्रह केलापर तँ लोक केतौ खाइए।"

फुसन कहलकैन-

"हमरा खाइले जे आग्रह कऽ रहल छी से अहाँक गाम-समाजमे भोज खाइले पंच नइए, आकि ढाठ-बान्ह केने अछि आकि अहीं

ढाठ-बान्ह केने छी। जँ से नइ अछि तँ की कारण अछि जे बहरबैयाकेँ खीबैक नौवत आएल। जँ गौआँ नै तखन बहरबैया किए खाएत। हमरा तँ लगैए अहाँ अपनाकेँ ऊँच बुझैत छिऐ आ दोसरकेँ नीच।”

फुसन बुढ़बाक बात सुनि फूल बाबूकेँ बकौर लगि गेलैन। किछु फुरेबे ने करैन।

फुसन बुढ़बा नजैरसँ फूल बाबूकेँ ऊपरसँ-निच्चाँ धरि हियौलैन। मौका पाबि पुन: बजला-

“अहाँक मनोभाव देखि हमरा लगैए जे मनमे जातिवादक दुर्गन्ध अखनो धरि ऐछे तँए भूखलो छी तँ नै खाएब। जँ से नै रहैत तँ जाति-पातिसँ ऊपर उठि गाम-समाजक सभ वर्गकेँ नौत दऽ खिऐबतौं ने, सभ आनन्दित होइतए। सबहक प्रेम आ जश सेहो भेटितए। सभ तँ प्रेम आ भावक भूखल होइए नै कि भातक भूखल। जखन अपने लोककेँ नीच बुझैछिऐ तँए ने लोको अहाँकेँ नीच बुझलक।अपने कहने जँ लोक मड़र होइतए तँ सभ मड़रे ने कहाइबतै। जीविका लेल ने लोक अलग-अलग काज करैए। मुदासभ तँ मनुखे जाति ने छी। से जँ आबो नै बुझबै तँ साड़ामे जाइबेर बूझि की करबै। एतेक तँ खियाल राखै पड़त जहिना सभ जाति मिलि समाजमे सबहक काजमे मदैत करैए तहिना जँ सभ जाति मिलि खानो-पीन, मेलो-बेवहार करब तखन ने समाजमे आपसी प्रेम-भाव बढ़त। अही अभावक कारणे ने आइ धरि समाज पछुआएले अछि।”

फूसन बुढ़बाक बात सुनि झगरूकेँ दिमाग भक्-दे खुजल। दिमाग खुलिते झगरू फूल बाबूकेँ कहलकैन-

“मालिक हिनकर ठेकनगर बात सुनि आइ हमरो अकील-ज्ञान भेल। जहिना नमहर घैलमे नान्हिटा छेद भेलापर सभ पानि रसे-रसे

चूई जाइए तहिना ने ऊँच-नीच जातिक भेद भावसँ समाजक रस बहि-बहि भेथिया गेल अछि। जखन रसे ने तखन एक साँझ खाइये कऽ की हएत। जँ अपने केलासँ भोज होइए तँ अपने घरमे भात-दालि आ दू-चारिटा तरूआ-बघरूआ, बरी-झोड़ी बना लेब आ एक-दू सेर दूधक सौजबी दही पौड़ परिवार मिलि खा लेब। तखन जातिक भोज लोक किए करत। कियो खाइए, कियो मुँह तकैए।"

फूल बाबू बजला-

"हम तँ अखनो धरि नै बुझलौं जे लोक जाति-ले किए मरैए। स्वार्थ सिद्ध करैले आकि राजनीति करैले। जातिक पेंचक बीच फँसि हमहूँ दूरि भऽ गेलौं।"

फूल बाबूक भोथियाएल बात सुनि फूसन बुढ़बा कहलखिन-

"एतेक मगजमारी जे जाति-ले लोक करैए ओइसँ केकरा की प्राप्त भेलैए। जाति छोड़ि जँ मानव जाति लेल एतेक काज केने रहितौं तँ महा मानव बनि गेल रहितौं।"

फूल बाबू दुनू हाथ जोड़ि फूसन बुढ़बाक आगू विनतीक स्वरमे बजला-

"बाबा, हमर बुधि जातिक भोजमे घुसैर गेल जे आब बुझलौं।"

"जखने जागी तखने परात।"

कहि फूसन बुझबा मोटरी लऽ विदा भऽ गेला।

O

जाति

आसिन मासक चारिम सप्ताहक समए अछि। बर्खाक पानि आ बाढ़िक पानि सेहो थीर भऽ गेल अछि। मुदा चर-चाँचरमे पानि भरले अछि। जइमे खेतिहर सभ पटुआ, सन्नइ, चन्नी, चन्ना काटि-झाड़ि गोड़ैत अछि। पानि गनहा रहल अछि।

दू गामक बीच अछि तँए चर दूर तक पसरल अछि। बहुत पहिनहिसँ दुनू गामक लोकक सेवा सेहो करैए। बुढ़-पुरानक कहब छैन जे पहिने कोसी अही चर देने बोहै छल। पछाइत मुँह भरना भेने दोसर दिस धार घूमि गेल। बरखा आ बाढ़िक समए उनटे कोसीक पानि आबि चरकेँ उपेछाल करि दइए। जखन बाढ़िक पानि घटैए तखन चरोक पानि स्वत: घटि जाइए। चरक पानि करिया समाढ़सँ करियाएल, तइमे भैँटक फूल कोसो धरि फुला शोभा बढ़ेने रहैए। तैबीच सिल्ली, गागन, लालशर, पनि कौआ इत्यादि अनेको रंगक चिड़ै-चुनमुनीक क्रीड़ा स्थलक संग शरण स्थल सेहो बनलए।

एक-दोसर गामक लोक जाइ-अबैले केतए-केतए समाढ़ हटा-हटा बीचमे सिरौर बना पानि टपैले रस्ता बनौने अछि। पानि बेसी रहने नाहक साधन सभ अपन-अपन रखने। जे नै रखने अछि ओ भरि डाँड़ भरि जाँघ पानि टपि ऐ-पारसँ ओइ-पार करैत अछि। बेवस्थो कोसी क्षेत्र-ले बेमुखे

अछि। ऐ क्षेत्रक नेता सभ क्षेत्रक विकास तँ कमे सन मुदा अपन विकास कऽ गामसँ दूर शहरमे बड़का फ्लैट बना रहै छैथ। तँ गाम बाढ़ि-पानिमे डुमैले किए औता। ई तँ गामबला बुझत जे गाम केकर छी। डीहबासूकेँ आकि बहरबैयाकेँ। नेतासभ तँ पाँच बर्खक पछाइत चुनावी महाकुम्भमे मात्र नहाइले अबै छैथ। सभ पुण्यकेँ मोटरी बान्हि नेने चलि जाइ छैथ।

चुनावक समए आएल। नेता सबहक उजैहिया गामे-गाम आबि गेल। क्षेत्रक वोँट बटोरै खातिर ओही कोसीक चर टपि ऐगला गाम जेबाक छैन। सोचलैन पएरे टपने लोक संघर्षशील नेता बुझत। जइसँ अधिक भोँट हएत।

नेता आ नेताक पीठलगुआ गामक कार्यकर्ता संगे सभ कियो जाँघ भरि पानि टपि पार हुअ लगला। तही क्रममे नेताजीकेँ एकटा नमहर पलैहिया जोंक धऽ लेलकैन। पार होइते नेताजीक जाँघसँ छरछर खून निकलए लगलैन। छरछर खून बहैत देख नेताजी छटपटा उठला। संगी सभ निहारि देखलक तँ देखैए नमगर जोंककेँ, जे खून पीब मोटा गेल अछि।

नेताजी जीबठ बान्हि जोंककेँ हाथसँ पकैड़ खींच-तीर कऽ छोड़ौलैन। एक हाथसँ छरछराइत खूनक दाढ़केँ दबने आ दोसर हाथसँ एकटा संगीक लाठीक हूरसँ जोंककेँ थोकैच-थोकैच मारए लगला।

जोंक तँ कठजीब होइते अछि। लाठीक हूरसँ नै मरैबला। तमसाएल नेताजीक मुहसँ निकललैन-

> "तोरा आर कियो ने भेटलौं जे हमरे खून पीबैले एलेँ। तोरा खनू बोकराए मारि देबौ।"

छटपटाइत जोंक बाजल-

> "हमहूँ तँ अहींक जाति छी, जाति जातिये लग ने जाएत। अहाँ जे एहेन निष्ठूर भऽ हमरा मरै छी से जातियोपर ने कनियोँ दया-धरम

अछि। अखन हम कोनो अपराधो तँ नहियेँ केलौं अछि। ई तँ जातिक सोभाव छी।"

नेताजी डाँटैत बजला-

"तूँ जलकीट, असरधे पानिमे रहैबला आ हम श्रेष्ठ मनुख फ्लैटमे रहनिहार, तखन तूँ केना हमर जाति भऽ सकै छेँ?"

जोंक कुहरैत बाजल-

"जहिना अहाँ जनताक खून पीबै छी तहिना ने हमहूँ खूने पीलौं अछि। अहूँ खूनपीबा आ हमहूँ खूनपीबा। तखन दुनू गोरे जातिये ने भेलौं। जातिक सर्टिफिकेटक चालि-चलनसँ बढ़ि कऽ आरो कोनो नमहर प्रमाण होइ छै जे देब। एक तँ पहिनहिसँ अहाँ सभ हमरापर एतेक अतियाचार केलौं जे हम भागि पड़ा कऽ पानिमे शरण नेने छी...।"

नेताजी आँखि लाल-पीअर करैत बजला-

"तूँ अपन प्राण बँचबैले ई जुमला हमरा सुनबै छेँ। तोरा बिनु मारने हम नै छोड़बै।"

बाजि नेताजी अनधुन लाठी जोंकक देहपर बरसाबए लगला।

अधमरू भेल जोंक बाजल-

"अदना सन गलतीपर हमरा सन अब्बल जीवकेँ जानसँ मारै छी आ अहाँ जे लाखक-लाख जनताक खून श्रेष्ठ मनुख भऽ पीबितो एलौं आ पीबितो छी से नीक लगैए।"

जोंकक ई बात नेताजीकेँ आरो तरङा देलकैन। तखने झुण्डसँ एक गोरे कहलकैन-

"नेताजी, चुन लगबैक आदेश देल जाए, अपने खून बोकरए लगत।"

चुनक नाओं सुनिते जोंक अपन प्राणक भीख मंगैत बाजल-

"जेकर आधार बना अहाँ अपन जीवनक यात्रा करै छी से तँ हमहूँ छीहे। दया करू..! जातिपर दया करू..!"

O

हहौती

मुनर आ खट्टर दुनू सहोदर भाँइ छैथ। दुनू भाँइ संग मिलि कमा-खटा कऽ परिवारक भरन-पोषण करै छैथ। बड़ भाय मुनर कमाइमे हुनरगर आ पित्तमरू, मुदा खट्टर कमकोढ़िया आ झंझटिया सोभावक अछि। मुनरकेँ दूटा बेटी आ एकटा बेटा छैन। खट्टरकेँ चारिटा बेटी आ तीनटा बेटा अछि। अनपढ़ रहितो संयुक्त परिवारमे मुनर सम-रूपसँ मिलि-जुलि भरन-पोषण करैक परियास करैत रहला अछि। खट्टरक पत्नी चतुर-चालाक। घरक समान आ टाका-पैसाक चोरनी। कोसल कऽ नैहरमे रखै छेली तँए परिवारक खर्चाक कोनो थाहे-पता ने लगै छल। खाइ-पीबैमे सेहो दनसन हुअ लगल।

एक दिन मुनरकेँ पत्नी असगरमे कहलकैन-

> "ई परिवार आब इजमालमे नै चलत। हमरा तीनटा धिया-पुता अछि दू परानी अपने मिला कुल पाँच गोरे छी, तैयो सभ कियो दिन-राति काज करैत-करैत खिया गेलौं। देखियो खट्टरकेँ सातटा धिया-पुता आ दू परानी लगा नअ गोरे अछि, तैयो ने कोनो काम-धाम करैए आ उनटे बीख उगलैत रहैए। ई बरदास के करत। भीन भऽ जाउ। आब जरमे नै लचत-बनत आ ने परिवारक इज्जत बँचत।"

पत्नीकेँ दमसाबैत मुनर बजला-

> “अहाँ नै बुझै छिऐ जर परिवारक मरम। जखन काजकेँ बाँटि-बाँटि करब तँ काजो बेसी हएत आ आनो लोक परिवारक संगठन देख सीखबो करत आ डरबो करत। दुखक समैमे एक-दोसरक सहयोगो करत। भीन भेलापर परिवार टुटि कऽ कमजोर भऽ जाइ छै आ समाजमे महौत सेहो घटि जाइ छै।”

खट्टरक पत्नी बड़ झमेलिया, उनटे कोनो कनाइर कऽ जेठ दियादिनीसँ झगैड़ मारि-पीटि केली। जखन खट्टर घर आएल तँ पत्नी उनटे बात बना चेकी-पर-चेकी चढ़बैत पतिक कान भरि देलक। खट्टर ने आगू देखलक आ ने पाछू, सोझे जा भौजीकेँ मुकियौलक आ बिखैन-बिखैन गरियौलक।

जखन मुनर घर आएल तँ परिवारक बिगड़ल दशा देख मन महुराएले मने दलानमे जा पड़ि रहला। एम्हर खट्टर आ हुनक पत्नी घरक समान-बरतन-बासन सभकेँ घरमे तेहिया-तेहिया सैंत लेलक। मुनर सभकेँ समझाबैत कहलखिन-

> “झगड़ा-झंझट कियो ने करह, मेल-मेधासँ रहह। सभ संगे खा-पीबह।”

मुदा खट्टर बड़ भाय- मुनरपर तनि बाजल-

> “आब जरमे कोनो काज आ खेनाइ-पीनाइ नै हएत, भीन भऽ अपन-अपन काज करू।”

मुनर मने-मन विचार केलक- भीनौजी बँटबारामे कोनो दियादकेँ पंचमे नै बजाएब, भऽ सकैए दियादी डाहसँ बहुतो अरचन भऽ जाएत। तँए मुनर खट्टरकेँ कहलखिन-

"हम तँ कहबौ सभ मिलि जरे रह आ नै मानमे तँ दुनू भाँइ अपनेमे बँटबारा कऽ ले।"

मुदा खट्टर भैयाक बात नै मानलक। बँटबारा करैले दूटा पंच जे मेलुआ छल तेकरा बजौलक। मुनर गामक बुजुर्ग लाल काकाकेँ बजौलक आ बँटबारा शुरू भेल। घर-घड़ारी, बाड़ी-झाड़ी, खेतिहर जमीन, बाँस-गाछी सभकेँ दू हिस्सा बाँटि जखन गाए-बरद आ बकरीकेँ हिस्सा लगबए लगल तखन निकहा बरद गाए बलजोरी खट्टर अपना हिस्सामे लऽ लेलक। बरतन-बासन सेहो पहिनहिसँ घरमे सैंतिये नेने छल। तखन बरबैर हिस्सा केना लगत। पंचमे बजौल गेल दुनू पंच खट्टरक पक्षमे मुँह-देखुआ पनचैती करै छल। लाल काका चुप भऽ सभ किछु देखै छला। मुदा केतेकाल तक चुप्पी साधने रहता। बजला-

"पंच निष्पक्ष होइत अछि। जे पंच पंचैती आ बँटबारामे पक्षपात करत ओकरा नरकोमे ने बास हेतै।"

खट्टरकेँ इशारा करैत फेर बजला-

"देख खट्टर, तोरा हहौती लागल छौ। केना से सुन- पढ़ल-लिखल सभ कहै छैथ जे महाभारतमे दुर्योधनकेँ हहौती लागल छेलै तँए पाण्डवकेँ बरबैर हिस्सा नै देलकै आ महाभारत भेलै। सभ कौरव युद्धमे मारल गेल। तहिना इतिहास कहै छै, सम्राट अशोक सेहो राजा बनैले निनानबे भाएकेँ मारि गद्दीपर बैसलै। मुगल कालमे औरंजेब सेहो तीनिटा भाएकेँ मारि राजा बनल छेलै। ओइसँ की भेलै सभकेँ सभ नासे-नाबूत भेलै किने। बौआ, धन-यौवन आ बाढ़िक पानि क्षनिक होइ छै। तँए बेइमानी नै कऽ इमानदारीसँ दुनू भाँइ बरबैर कऽ सभ समान बाँटि अपन-अपन राज-काज करै जो। तखन सुख-शान्तिसँ रहब। नै तँ दुनू लड़ि-झगैर कऽ बेरबाद भऽ जेमें आ अन्तमे भेटतौ किछु नइ।"

लाल कक्काक बात सुनिते खट्टरकेँ अकिल भेलै। सिर झूका कऽ अपन गलती खातिर क्षमा मंगलक।

लाल काका खट्टरकेँ कहलखिन-

> “जखन तूँ अपन गलती-ले क्षमा मांगै छेँ तँ सुन, जेतए बहुते बरतन रहै छै ओतै ने ढनमनाइ छै तहिना जइ परिवारमे बहुत लोक रहै छै तँ आपसमे टना-टनी भऽ जाइ छै। अखनो किछु ने भेलौ हेन। बँटबारा की करमेँ, मिलि-जुलि जरेमे रह। जर परिवारक एकटा अलग महत होइ छै। मुनर तोहर बड़ भाय छथुन। तूँ भैया आ भौजीक पएर पकैड़ माफी मांगि-ले।”

खट्टर भैया-भौजीक पएर पकैड़ माफी मंगलक। दुनू भाँइक आँखिसँ दहो-बहो नोर गिरए लगल। मुनर खट्टरकेँ दुनू हाथसँ पकैड़ छातीसँ लगौलखिन। जेना लगल राम आ भरत दुनू मिलि रहल अछि।

अन्तमे लाल काका खट्टरकेँ कहलखिन-

> “एहने प्रेम सभ दिन राखि जिनगी निरवाह करिहह आ जिनगी भरि मन रखिहह जे हहौती ने कहियो आबह।”

O

बुज़ुर्गक दुख के हरत?

मोहन काका भोरबेमे जागि, घूर लग बैस चिलममे कंकर बौझि हुक्का गुड़गुड़बै छला। जाड़क मास रातियो पहाड़ सन नमहर, ओछनिपर सूतल-सूतल देह भरिया गेल छेलैन। कर्सी-गोइठाक तलफल आगि खोरि तापए लगला। जहिना घूरक आगि तलफए, तहिना मोहन कक्काक दिलमे लगल आगि सेहो तलफैत रहए। हुक्का पिऐक तलक लगलेरहैन तँए उकासीपर उकासी हुअ लगलैन। खोंखी करैत-करैत देह थरथराए लगलैन। तैयो हुक्कामे सोंट मारि-मारि खों-खों करिते छला आकि तखने पड़ोसिया बेचन उठि कऽ मोहन काका लग आगि तापए आएल।

मोहन काका बेचनकेँ देख थरथराइते स्वरमे बजला-

"आबह बेचन बैस कऽ आगि तापि लएह।"

बेचन बाजल-

"हँ काका, एलौं हेन आगिये तपैले। अहाँक खोंखी सुनि हमरो नीन टुटि गेल। सोचलौं कक्कासँ बहुत दिन भेँट भेला भऽ गेल, भेँटो-घाँट कऽ लेब आ दुख-सुखक गप-सप्प सेहो बतिया लेब।"

किछु सोचैत बेचन पुन: बाजल-

"हौ काका, काकीक चलह-पहल नै देखै छी।"

मोहन काका बजला-

"बेचन, तोरासँ लाथ की करब। तूँ तँ पड़ोसी छह तोरे सभपर तँ हमरो आशा अछि। दुख-सुखमे तँ तोहीं सभ ने देख-रेख करै छह।"

बेचन बाजल-

"काका, अहाँक दर्शन तँ भाइए जाइए मुदा काकीक दर्शन भेला बहुत दिन भऽ गेल तँए आइ दर्शन काइए कऽ जाएब।"

मोहन काका बजला-

"काकी तोहर मास दिनसँ बेमार छह। अखैन तँ ऐ बुढ़ाड़ीमे अपने हाथ-पएर झड़काबए पड़ैए। एक लोटा पानियोँ देनिहार नै अछि। एकटा दवाइ भोरे भूखले पेटे खाए पड़ैए, कनी एक लोटा पानि इनारसँ टटका भरि कऽ आनि दएह।"

लोटा लऽ बेचन इनारपर जा लोटाकेँ माजि-धोइ कऽ एक लोटा पानि काका लग राखि देलक।

मोहन काका दवाइ खा कऽ बजला-

"कनी काकियोकेँ हाल-चाल देख लहक, बेचन। एकटा दवाइयो जनु सठल छै, नै हेतै तँ सेहो कनी आनि दिहक।"

बेचन बाजल-

"से तँ हम आनि देब काका, मुदा एतेक कष्ट जे काटै छह से बेटा-पुतोहुकेँ किछु दिन लेल बजा लेबह से नइ?"

मोहन काका सोगाएले मने बजला-

“बेचन तूँ तँ जनै छहक जे ऐ इकलौतबा महेशक खातिर कोन-कोन करम ने केलौं। केतेक दुख काटि पढ़ेलौं-लिखेलौं। जन-मजदुरी करैत-करैत हाथ-पएरमे जे ठेला-पर-ठेला पड़ि गेल से अखनो धरि ने मेटाएल हेन। सोचलौं जे दुखो काटि बेटाकें पढ़ा-लिखा दइ छी, कोनो नोकरी करत तँ हमरो बुढ़ाड़ीमे सुख हएत। बेटाक कमाइसँ जिनगीक आगूक दिन नीकसँ कटत। मुदा उनटे भऽ गेल।”

बेचन बाजल-

“एना किए भऽ गेलह, काका? जखैन सपेता रोपब तँ कलकतिया किए भऽ जाएत?”

मोहन काका बजला-

“गाछपर बिसवास अछि जे ओ अपन गुण-धरमकें सोलहन्नी नै बदलैए मुदा मनुखकें बदलैमे तँ कोनो समैए ने लगै छै। महेशकें कहै छी तँ कहैए छुट्टीए ने मिलैए। पुतोहु तेहेन अँठिलाहि अछि जे ठोर-पर-ठोर बैसबे ने करै छै। जँ कहियो छुट्टी हेबो करै छै तँ नैहरेमे बितबैए। हमरा के देखैए। हम जेहेन केलौं से भोगि रहल छी, एहेन कष्ट तँ भगवान सात-घर दुश्मनोकें नै देथुन।”

बेचन बाजल-

“हौ काका, बेटा-पुतोहुकें यएह धरम बनैए?”

मोहन काका बजला-

“बेचन बौआ, आब बेसी नै पुछह, अत्मा खंगहैर रहल अछि। हम जेहेन खाधि ने खुनलौं जे मुहें-भरे अपने खसि पड़लौं। हौ बेचन, समाजसँ बढ़ि कऽ कियो ने हएत। जीतोमे समाज आ मुइलोमे

समाज। जिनगी भरि तँ बेटे-ले सभ किछ केलौं मुदा आब पचताइ छी, जे समाज-ले किछु ने केलौं।”

मोहन कक्काक बात सुनि बेचन बाजल-

“से तँ काका तूँ ठीके कहै छहक, तोरा तँ एकेटा बेटा-पुतोहु छल, जे नै करै छह, मुदा रविकान्तकेँ देखहक जे दूटा बेटा छैन, दुनू अधिकारीक पदपर नौकरी करै छैन। ओहो दुनू भाँइ माए-बापकेँ घुमियोँ कऽ ने तकै छैन। रविकान्तक पत्नीकेँ पोताक मुँह देखैले मन लगले रहलैन आ मरि गेली। तीन दिन धरि लहास घरेमे बेटा-पुतोहुक आशामे पड़ल रहल मुदा दुनू बेटा माएकेँ आगियो दइले ने एलै। तखन रविकान्तक भतीजा बुढ़ियाकेँ आगि दऽ अन्तिम संस्कार केलकै। कहु काका के अपन भेल? जखैन पढ़ि-लिखि कऽ लोक एक तरफ विकास केलकै तँ दोसर दिस अपन करतबकेँ बिसैर गेल। लोको सभ तँ बेटा-बेटीकेँ ज्ञान-ले थोड़े पढ़बैए, पढ़बैए नोकरी खातिर। जे नोकरी करत ओ माए-बापकेँ की देखत। ओ तँ अपने गुलाम रहैए। लोको तँ अपने बेगरते स्वार्थमे आन्हर बनल अछि।”

गप-सप्प करैत दुनू बेकतीक मोन दुखा गेल। थोड़े कालक पछाइत बेचन फेर बाजल-

“ऐसँ नीक तँ मुनर अछि, तीनटा बेटा-पुतोहु छै आ दर्जन भरि पोता-पोती। एतेक नमहर परिवार रहितो ने मुनर आ ने ओकर बेटा सभ कहियो कमाइले परदेश गेल। रौदी-दाहीमे सेहो अपने गाम-समाजमे जन-मजदुरी कऽ एक नम्मर जिनगी जीबैए। तीनू बेटा कोल्हुक बरद जकाँ दिन-राति परिश्रम करैए आ अपन माए-बापकेँ

तरहत्थीपर रखने अछि। कनिको मन खराब होइ छै तँ बेटा सभ कन्हेपर लादि कऽ डाक्टर ऐठाम इलाज करबए लऽ जाइए। देखबहक तँ लगतह मुनरक बेटा सभ ऐ युगक श्रवण कुमार छी। आब तोहीं कहह जे पढ़लाहा परिवारमे बुजुर्गक सेवा-सम्मान होइ छै कि बिनु पढ़लाहा परिवारकमे। हमरा तँ लगैए जखैन पढ़लाहा परिवारक ई हाल छै तँ आगू समजमे बड़-बुजुर्गक समस्या दिनो-दिन बढ़बे करतै। जे पढ़ियो कऽ अपन माए-बापकेँ नै भेलै तँ ओ समाज-ले की करत!"

बेचनक बात सुनि मोहन काकाकेँ मुँहक बोल जेना बिला गेलैन किछु ने बाजि होनि। बेचन काकीसँ भेँट कऽ दवाइयक पुर्जा जेबीमे रखि विदा भऽ गेल।

O

बिलाइ रस्ता कटलक

बहू-दिनक पछाइत एकठाम मैथिली कथा गोष्ठी भऽ रहल छल। दूर-दूरसँ साहित्य-प्रेमी श्रोत्रा, कथाकार आ समीक्षक लोकैन आएल छला। गोष्ठीक आयोजन-समैपर दीप प्रज्वलित करि विधिवत् शुभारम्भ भेल। समैपर दीप प्रज्वलित कऽ विधिवत् गोष्ठीक शुभारम्भ कएल गेल। सत्रक अंतमे समीक्षक लोकैन पठित चारू कथापर टिप्पणी करैत रहला।

दू सत्र बितल आ तेसर सत्रक आरम्भमे आनन्द बाबू कथा वाचन शुरू केलैन। कथाक शीर्षक छेलैन- 'अशुभ यात्रा'। कथाक केन्द्रीय भाव छेलै जे बिलाइ रस्ता काटि हमर यात्राकेँ अशुभ बना देलक, जइसँ दूर्घटना भऽ गेल। बाल-बाल बचलौं। ऐ तरहेँ कथा वाचन होइत सत्रक अन्तमे समीक्षा हुअ लगल। प्रोफेसर अमरजी कथाक चर्चा करैत बजला-

> "सहीमे शुभ यात्राक समए जखन वरतुहारीमे लोक विदा होइए तखन जौं बिलाइ रस्ता काटि दइए तँ बुझू जे यात्रा निश्चित रूपसँ अशुभ भऽ जाइए। घटना दुर्घटना तँ हेबे करत।"

उदाहरण दैत पुन:बजला-

"एकबेर कारसँ सात गोरे हम-सब घरदेखीमे जाइ छेलौं आकि बिच्चेमे एकटा बिलाइ रस्ता काटि भागि गेल। ड्राइवर गाड़ी रोकि गाड़ीकेँ तीन डेग पाछू केलक आ सड़कपर थूक थूका कऽ आगू बढ़ल। किछु कालक पछाइत गाड़ीक पहिया खुजि गेल आ गाड़ीक दुर्घटना भऽ गेल। जइमे तीन गोरेक हाड़-पाँजर टुटल आ तीन गोरेकेँ कपार फूटि गेल। ड्राइवरक एकटा पएर कटि गेल।"

दोसर समीक्षक किशोर बाबू बजला-

"से तँ ठीके होइए। एक बेर हमहूँ बेटीकेँ परीक्षा दीबैले मोटर साइकिलसँ जाइ छेलौं कि बिलाइ रस्ता काटि देलक। मुदा हमरा जल्दी जेबाक रहए किए तँ समए कम छेलै। आगू बढ़ैत गेलौं। किछु दूर जा मोटर साइकिलक चक्का अवाज कऽ गेल आ हम दुनू गोरे सड़केपर खसि पड़लौं। टाँग-हाथ टुटि गेल। बेटी परीक्षा की देती, अस्पतालमे भर्ती हुअ पड़लै।"

तेसर समीक्षक सेहो सहमति भरैत बजला-

"हँ, यौ ई बड़गड़बर आ अशुभ होइए जखैन बिलाइ रस्ता काटि दइए। ई हमरो विषाएल अछि। एक बेर हमहूँ ऐ चक्करमे पड़ि गेल रही। कहुना बँचैत-बँचैत बँचलौं बुझू जे माए खड़जीतिया केने रहए।"

समीक्षा होइते रहै मुदा किछु कथाकार आ समीक्षक लोकैनकेँ अनरगल-अनसोंहाँत आ अनोन-विसनोन लगलैन। किए बिना मतलब समीक्षक लोकैन विषयसँ बोहिया रहला हेन! बिनु मतलबक तूल पकड़ने जा रहला अछि। एतेक छोट गपकेँ तिलक-तार बनौने जा रहल छैथ जे एक छोट जानवरक पाछू पिल कऽ मनुख सन विवेकी प्राणी पड़ि गेल हेन। हमरा तँ बूझि पड़ैए जे ई कथा गोष्ठी धिया-पुताक घरबा-दुअरबा खेल तँ ने भऽ

गेल। आकि कोनो साजिश रचि एना ओझड़ा-ओझड़ा बाजि रहला हेन। मुदा समस्या अछि जे एतेक पैघ विद्वान समीक्षक सभक मुँहपर जबाव के देतैन? जखन जबाव देनिहार जौं सरकारी नौकरी करैबला रहत तँ चक्रव्यूहमे फँसा खा जेता। जौं कहीं प्राइवेटमे नौकरी करैत हएत तँ कान पकैड़ हटबा देता। जौं कहीं अखवार, पत्रिका वा फेश-बुकपर किछु टिप्पनी करत तँ धमकीपर धमकी पड़ए लगत। तँए बाजबसँ चुप्पे भला बुझै छला।

तही बिचमे सुमन बाबूकेँ नै रहल गेलैन। ओ ससैर-सहैट कऽ लगमे जा मैककेँ लपैक मुँहसँ सटा कऽ बजला-

> “दुनियाँमे एतेक घटना-दुर्घटना दिन-राति होइए की तेकर कारण बिलाइए रस्ता कटने रहै छै? हजारो-हजार किलो-मीटरक सड़क-मार्ग,रेल मार्ग यातायात लेल बनल अछि, तैपर हजारो जानवर सभ रस्ता कटैए अथबा गाड़ीसँ टकरा कऽ मरि जाइए, तेकर ने कोनो चर्चा आ ने सरोकार लोक बुझैए। मुदा बिलाइ सन छोट जानवरपर जे एतेक प्रहार आ अत्याचार होइए से किए? की बिलाइकेँ जीबैक अधिकार नै छै। जौं नहि अछि तँ लोक बिलाइकेँ मारि धरतीपर सँ उसरन किए ने कऽ दइ छी। की उत्तरांचलमे जे एतेक प्राकृतिक हादसा भेलै तँ से बिलाइयेक कारण। पंजाबमे एकटा बस नहरमे गिर गेल छेलै, बसमे सवार सभ लोक डूमि कऽ मरि गेल, की बिलाइए रस्ता कटने छेलै? बिहारमे सहरसा लग धमौरा स्टेशनपर रेलसँ कटि बहुतो लोक मरि गेल तेकरो बिलाइए रस्ता कटने छेलै? जौं सहीमे बिलाइक चलते घटना होइ छै तँ सभटा आरोप बिलाइपर किए ने लगै छै।”

समीक्षाकेँ आगू बढ़बैत मणिकान्त बाबू बजला-

> "आइ एक्कैसम सदीमे दुनियाँ एतेक आगू बढ़ि गेल अछि। मुदा मिथिलांचलमे लोकक सोचब किए एतेक पछुआएल अछि जे अपन गलतीकेँ सुधार नै करैए आ बिलाइ रस्ता काटि दइ छै? तैपर बगुलबा-धियान लगेने रहै छैथ। आइक दिन अन्हराकेँ विकासमे बिसवास होइ छै, मुदा आँखिबला किए अंध-बिसवासमे फँसि सभकेँ फँसा रहल छैथ। एहेन अंध-बिसवासमे फँसल लोक केना ज्ञानी आ अज्ञानीक श्रेणीकेँ फुटौता? तँए ने मिथिलाक विकासमे अखनो धरि बिलाइ रस्ता कटने अछि।"

मणिकान्त बाबूक विचार सुनि सभ समीक्षक सोचमे पड़ि गेला। तखने गोष्ठीक अध्यक्ष महोदय भोजनावकाशक घोषणा केलैन।

O

छुतहर

पंचू बाबा गामक गरीब बेकती छैथ। समाजक पैघ लोकक सामने दबल छैथ, माने गामक मालिक-मुखतियार सभ हिनका तरजूक पासङो बरबैर महत नइ दइ छैन। गाममे बेसी धनिक लोकक चला-चलती रहने गरीब केहनो काबिल रहए मुदा बुड़िबके होइत अछि। मुदा गरीब रहितो पंचू बाबा अपन जिनगीकेँ एतेक सोझरेने आ सरल बनेने छैथ जे बाहरी झाँट-बिहाड़िकेँ कोनो परबाहे ने करै छैथ। परिवारो कमौआ आ समंगर रहने कियो केकरो अब्बे-तब्बेमे ने रहै छैथ। बूढ़-पुरान रहितो हुनक सोच पुरान, कविकाठी[1] नै छैन। नव विचार संगे समाजसेवी आ जनहित काजमे सेहो रूचि रखैबला लोक छैथ पंचू बाबा।

सिरूआ पावैन लगिचाएल अछि। सभ कियो पावैनक ओरियानमे लगल अछि। पंचू बाबा सिरूआ मेलामे सभ साल ओहन चीज-वौस कीनै छैथ जे परिवारमे सबहक उपयोगी होइ। अही गुन-धुनमे पंचू बाबा लगल छला। गामक सटले रानीगढ़ी परतीपर सिरूआ मेला तीन-दिना लगैए। ओइ मेलामे गामक जिनगीसँ जुड़ल जरूरतक सभ चीज वौस बिकाइए।

---

[1] ओहन कवि जिनकर वाचा कर्मणा बहुत अन्तर रहैए।

किसानक हर, हरीश, लागैन, पालो, चौकी, पलंग, हँसुआ, खुरपीसँ लऽ कऽ कुम्हारक कुम्हरौटी माटिक गढ़ल बरतन बासन-कुसन, बच्चा-बेदरूक खिलौनाक संग सब तरहक दोकान हाटो-बजारसँ बेसी सजल रहैए।

पंचू बाबाक मनमे उपकल- अहुना चैत-बैशाखक रौदक सूखल आ आबामे पकल माटिक बरतन-बासन पकगर रूनगन आ बौकार होइए। मेलामे ऐबेर पानि भरैले घैल आ अचार रखैले करिया रंगक मोहना झँपना लगल कीनब। जेकर खगता परिवारमे ऐछे। घैल कीनै काल पोता पुछलकैन-

> "दादा, जखन पानि भरैले घरमे दूटा तमघैल ऐछे तखन माटिक घैल की हएत?"

पंचू बाबा पोताकेँ कहलखिन-

> "बौआ, तूँ अखनी नै बुझबीही। माटिक घैलक पानिक जे महत मनुखक जिनगीमे अछि से कोनो आन बरतनक पानिक नै होइए। तहूमे गरमी समैमे तँ अमृत मानल जाइए।"

सालो ने लगल, सात-आठ मासक पछाइत जाड़क समैमे मोहन बाबूक बड़ भाय चन्दू बाबू स्वर्गवास भऽ गेला। हुनका दू बरख पहिने लकबा मारि देने छल। रोगसँ रोगा लोथ भऽ गेल छला। शरीरमे खाली कष्ठेटा बँचि गेल रहैन।

मृत्यु भेने परिवारक लोककेँ कोनो शोक-सन्ताप तँ नै भेल। परिवारमे तीनटा बेटी छैन जे सिआन-भलढेरबा, एकपिठिया तराऊपरी अछि। आ दूटा छोट-छोट बेटा पत्नीक माथपर भार छोड़ि गेला। से पैघ समस्या भऽ गेल। तैपर सँ श्राद्ध-कर्म आ भोज-भातक खर्चाक चिन्ता सेहो। छुतुक भेने केशकट्टा दियाद सभ माटिक बासन- छुतहर, घैल, तौला, पतली, करही, खापैड़ सभटा उठा कऽ बँसबिट्टीमे फेक आएल। मुदा पंचू बाबा दियाद रहितो अपन घरक माटिक बरतन-बासन नै फेकलैन।

घरक जनिजातिसँ लऽ कऽ आनो परिवारक जनिजाति सभ कनफुसकी करए लगली।

"दू दिन बितियो गेल हेन मुदा पंचू बाबक अँगनामे घैलचीपर घैल अखनो तँ ऐछे! ओही घैलक पानि पीब रहल छैथ।"

कनफुसकी बढ़ैत-बढ़ैत सौंसे समाजमे पसैर गेल।

छौर-झँप्पी माने तेरातिक पछाइत समाजक सम्मत-सलाह लेल बैसार बैसल। तइमे पंचू बाबापर सभ कियो कनखड़ल रहबे करए। गामक देबान-बजला-

"छुतुक भेने घैल-छुतहर फेकब एक रीत-रेबाजक परमपरा अपना समाजमे पहिनो छल आ अखनो अछि, तखन पंचू बाबा ने किए फेकलैन?"

पंचू बाबा ठाढ़ होइत बजला-

"छुतुक माटिये बतरनमे किए लगत, तखन तँ घातुओक बरतन ने किए फेकल जाइए। सभ तँ बरतने-बासन ने छी। जखन बरतनक गुण-धरममे छुतुक भेने कोनो परिवर्तने ने होइए तखन किए फेक देब। आखिर की कारणसँ माटिये बरतनकेँ छुतहर मानब आ फेक देब? ऐमे ओकर कोन दोख जे ओकरा एहेन सजा देल जाइए। जखन जरूरत रहैए तँ गोसाँइ घरसँ लऽ कऽ पूजा-पाठ, देव धरमक काजमे माटिक बरतनकेँ शुद्ध शुभ मानि करै छी आ अन्ध-बिसवामे पड़ि गुहाँरीमे ओकरा फेकै छी, से केतेक उचित भेल?"

पंचू बाबाक बात सुनि सभ दियादवाद विरोध करैत बाजल-

> "अहाँ समाजकेँ उल्लंधन केलिऐ, अहाँ छुतरहक पनिपीबा छी! अहाँ अछोप छी तँए अहाँ दियादवाद आ समाजसँ दूर रहू आ अपने आगिये-पानियेँ निमाह करू।"

ई गप तुल पकैड़ समाजक आनो पंच सभ सुनि आरो बतंगर बना देलक। कुकरौंझ करैत सभ कियो बाजए लगल-

> "पंचू बाबा जाबे जुरिमाना समाजमे नै देता ताबे ढाठल रहता। समाजमे हुनका संग हुक्का-चीलम सेहो बन्न रहत।"

पंचू बाबा हिमतगर लोक, हारि नै मानलैन। सही कर्मकेँ धरम बुझै छैथ। ओ ने धर्मान्ध आ ने बिटन्डी छैथ। असगरे समाजक सामने अरि गेला आ गरजैत बजला-

> "हम कोनो चोर आ हत्यारा नै छी जे अहाँ सबहक सामने सिर झूका माफी मांगि लेब। सभ कियो मिलि पहने श्राद्ध-कर्मसँ निपैट लिअ तखन हम शरहानापर सभा-पंच आ जबारी-पंचक बीच पंचैती देब। जे फैसला हएत से मानब।"

समाजक देमानकेँ बाबाक बात जँचल। ओ आगू पंचैतीक निर्णए दऽ उठि गेला।

पंचू बाबा घर दिस विदा भेला मुदा मनमे खुदबुदी उठए लगलैन। समाज तँ समाजे छी कखनो प्रबल होइए तँ कखनो दयावान सेहो होइए...। मुदा फेर मनमे भेलैन- की हएत तेकर ठेकान अखैनियेँ करब से नीक नै हएत। ई तँ सत्य छी जे सत्यक विजय सदिखन होइत आएल आ हेबो करत से बिसवास तँ मनमे ऐछे।

एम्हर दियाद सबहक मन टुटल, विचार केलक जे पहिने अगुआएल काज तइ सभसँ निचेन भऽ जाइ छी तखन पंचैती चैनसँ हएत।

पंचू बाबा समाजसँ अरारि तँ कऽ लेलैन मुदा मन घुचुर-पुचुर करए लगलैन। एक मन कहलकैन-

> “लोक सबहक कहब छै जे पहिने ने पंच-परमेश्वर होइ छला, मुदा अखुनका पंच तँ घुसेश्वर होइए। एक दिश समाज उलैट पड़ल अछि आ दोसर दिस हम असगरे रण टेकने छी। तखन पंचैती कोन करोट लेत से तँ महेश्वरे ने कहत।”

दोसर मन कहलकैन-

> “जहिया जे हेतै से हेतै, तइले अखैन किए मगजमारी करब। जखन उखरियेमे मुँह देने छी तँ समाठक केतेक डर करब।”

श्राद्ध-कर्म आ भोज-भात सम्पन्न भेला पछाइत पंचू बाबाक दरबज्जापर समाजिक बैसार बैसल। जइमे सभ तरहक पंच, जबारी-पंच आ समाजक बारहो-वर्णक मुख पंच बैसल छला। पंचैतीमे तर्क-वितर्क हुअ लगल। बहसा-बहसी होइत-होइत सभा-पंचमे आ जबारी-पंचमे मतभेद भेल आ नमहर पेंच फँसि मारि-पीटक माहौल बनल। मुदा बँचल। सभा परहक पंचक कहब भेल जे पंचूबाबा समाजक बात किए ने मानलैन, तेकर जुरिमाना दिअ पड़तैन। मुदा जबारी-पंचक कहब रहैन जे अदनीसन बात-ले जुरिमाना किए देता।

पंचक बीच एक-मत बनबे ने करए, बेर-बेर धक्कम-धुक्का होइत रहल। तखन पंचू बाबा हाथ जोड़ि पंच-भगवानसँ विनीत स्वरमे बजला-

> “हमरा खातिर कियो मारि-पीट नै करू। मुद्दा अछि, छुतहर। तइले अपनामे किए लड़ि-झगैड़ मरब। हम छुतहरकेँ अहीं सबहक बीच राखि दइ छी। अपने सभ मिलि भाँगि-फोरि दियौ आकि फेरसँ कोनो विचार करियो।”

बजैत पंचू बाबा अँगनासँ छुतहर आनि पंचक बीच राखि देलखिन। पंचमे सभ कविकाठीए तँ नहियेँ छला। किनको मति-सुमति तँ किनको कुमति सेहो होइए।

के पंच ई छुतहरकेँ भाँगत-फोरत? ई एकटा प्रश्न बनि ठाढ़ भेल। सभ चुप। कियो ने किछ बाजैथ।

सभकेँ चुप देख छुतहर दीन-भावसँ बाजल-

> "कनी हमरापर विचार करू जे हमर की कसूर अछि। ने हम किनको किछ बिगाड़ने छी आ ने किनको सतेने छी। हम तँ सदिखन अहाँ सबहक सेवामे आदियेे कालसँ लागल रहलौं आ अखनो करैले तैयार छी। तखन भरल सभामे हमर इज्जत उतारि हत्या करैले किए उतारू छी?"

छुतहरक बात सुनि सभ पंचकेँ बुकौर लगि गेलैन। किनको किछु फुरबे ने करैन। अवसर देख छुतहर फेर बाजल-

"हम अखैन चूप नै रहब, हम और बाजब। जखन पूजा-पाठ, होम-जाप आदि जनमसँ लऽ कऽ धरम-करम धरिमे संग दइ छी। सभ कियो हमरो मान-सम्मान दइ छी, मुदा मरण दिन छुतरह कहि किए बँसबिट्टी, डबरा आकि खत्तामे फोरि-भाँगि कऽ फेकै छी? की बरतन-बासनक रूपमे सबहक घरमे हमहींटा छी? आन-आन बरतनकेँ किए ने छुतहर कहि फेकै छी? जइ दिन आन कोनो बरतनक जनम नइ भेल छल तही दिनसँ हम अहाँ सबहक इज्जत रखलौं आ आइ अहाँ सभ छोटहा बुझै छी! ई अवगुण तँ हमरामे नै अछि जे किनको संग ऊँच-नीचक भेद केने होइ। किनको दलित आ किनको महादलित बुझने होइ, किनको छूत आ किनको अछूत बुझने होइ। ऐ तरहक बेवहार हम ने आइ धरि किनको संग केलौं आ ने भविसमे करब। एकबेर आँखि उठा कऽ देखियौ अहाँ सभ अपना समाजमे जे केहेन-केहेन कुकर्मी आ अत्याचारीकेँ स्थान देने छिऐ। किए हमरा सन निर्दोषकेँ

छुतहर कहि हत्या करै छी? तैयो हमरा मनमे अहाँ सबहक प्रति कोनो द्वेष नै मुदा अहाँ सभकेँ हमरा प्रति मनरोग किए? तेकर विचार तँ अहीं सभकेँ ने करए पड़त।”

O

मोंछक लड़ाइ

दुभिकेँ अपन चतरल-लतरल हरियरी देख मन उमकल। मन की उमकल, अपन इतिहासक घमण्ड छेलै जे हम बड़ गुणकारी आ उपकारी छी। हमरासँ पैघ पवित्र शुभ कियो ने..!

पोरे-पोर गोड़ा रोपने धरतीसँ सटि कखनो कनोजैड़ छोड़ैत तँ कखनो सीरकेँ जालसँ भूमिकेँ जलियाह बनबैत अपन लहकी लहलहाइत जिनगी आ वंशजकेँ धरतीपर पसारि राज करैत जे अमरत्व प्राप्त केने छी, तैपर घमण्ड किए ने करब..?

घमण्डक निशाँमे मातल दुभि बड़बड़ाइत बाजल-

> “हम अमृत पीब अमर छी। औषधीय गुणसँ गुणवान छी, केतेक जानवरक भोजन बनि पेट भरै छी। धरतीकेँ बँचबैमे सेहो मददगार छी। मनुखोकेँ पूजा-पाठसँ लऽ कऽ सभ शुभ काजमे काज अबै छी। बेटियोक विदाइ बेर खौंछिमे जा एक गामसँ दोसर गाममे परिवारकेँ हरियरी दइ छी। कियो एकटा-दूटा काज करैए तँ घमण्डसँ घमण्डी बनि जाइए आ हम तँ सहजे दिन-राति सबहक काजो करै छी आ उपकारो। तखन घमण्ड किए ने करब।”

दुभिक घमण्ड आ बढ़ल-चढ़ल बोली सुनि पड़ोसी अमरलत्तीकेँ अनसोहाँत लगल। ओ हुलकी दऽ टोकारा दैत बाजल-

> “सभ दिन तूँ बताहे बनल रहबह। कहै छहक हम बड़ पैघ छी, की पैघक यएह लक्षण होइए। नाओं दायबती आ देह उघारे! अपन बड़ाइ जे अपने मुहेँ करै छहक से की शोभा दइ छह? जखन दोसराक मुहेँ सुनबहक से ने नीक हेतह।”

टोका-चाली होइत रगड़ासँ झगड़ामे बदैल गेल। दुनू एक-दोसरकेँ बिखैन-बिखैन गारियौलक।

उलहन दैत दुभि बाजल-

> “तू अछोप छेँ तँए ने लोक जमीनपर सँ भगा देलको जे गाछपर फाँसी लगा लटकल रहै छेँ। देहक कोनो गत्तरमे लाजे ने छौ, दोसरेकेँ खून पीबि जीबो करै छेँ। हम आत्म-निर्भर छी आ तूँ परजीवी छेँ, तखन हमरासँ पैघ केना भऽ सकै छेँ तूँ?”

अमरलत्तीकेँ दुभिक बात सुनि सौंसे देहमे आगि नेस देलक। अगियाएले मने बाजल-

> “हम कोनो निमोछा छी, तोरा एहेन हाल करबौ जे मन रहतौ। अन्हरा दुसए डिठराकेँ। अछोप तँ अपने ने छेँ जे लोको आ जानवरो मुड़ी काटि लइ छौ आ लतियेबो-थुकियेबो करै छौ। पैघ बनैए!”

दुभि अपन शब्दभेदी वाण चलबैत अमरलत्तीकेँ कहलक-

> “हम पैघ आ पवित्र कोनो आइसँ छी। अमृत पीब अमर छी पूजो-पाठमे सबहक सिर चढ़ि रक्षा करै छी। सबहक मान-सम्मान करै छी आ सभ हमरो करैए। तखन हम अछोप केना भेलौं?”

ब्रह्मास्त्र चलबैत अमरलत्ती दुभिकेँ कहलक-

> “चालैन दुसैए सूपकेँ, मुदा अपने सौंसे देह भूरे-भूर तेकर परि तूँ करै छेँ। तोरा ई नै बुझल छौ जे हमहूँ अमृत पीने छी, तँए ने हमर नाओ अमरलत्ती अछि। हम तँ तोरासँ छूबाइ खातिर जमीन छोड़ि दोसरकेँ माथपर बसि राज करै छी। तोरासँ बुधिजीवि सेहो छी जे ओकरे खून चूसि-चूसि जीबो करै छी आ बिनु परिश्रम केनहि मलाइ खाइत रहै छी। हरि नाम जपि सदिखन हरियरी देने रहै छी।”

जेहने रगड़ाह दुभि तेहने अमरलत्ती। दुनूक बीच झगड़ा रहत तखन ने सोझराएत। मुदा ई तँ बातक रगड़ा छी। तहूमे मोंछक लड़ाइ। दुनूक बीच बहुत दिन धरि फुला-फुली आ कनारि चलैत रहल। फरिछौठक कोनो संयोगे ने बनए। मुदा, एतेक विचार दुनूक मनमे रहै जे पड़ोसीसँ झगड़ा नै, मेल-प्रेमसँ रहबाक चाही। किएक तँ सभ किछु बदलल जा सकैए, मुदा पड़ोसी नै बदलल जा सकैए। किछु दिन बितल तखन अमरलत्तीकेँ निशाँ टुटल। दुभि लग आबि बाजल-

> “यौ, पड़ोसीक नाते तँ दुख-सुखक बात बाजि सकै छी। ई मोंछक लड़ाइ केतेक दिन धरि लड़ब। लड़ब की, सोचैत-सोचैत सोगा-रोगा कऽ चितापर चढ़ि जाएब। तइसँ नीक रगड़ाक फरियौठ करैले तेसर पड़ोसी लग चलल जाए, जे अपना दुनूक बात सुनि पंच बनि दूधक-दूध आ पानिक-पानि बेड़ा देत।”

दुभिकेँ अमरलत्तीक कहब जँचल, ‘हँ’मे ‘हँ’ भरलक।

विहाने भेने दुभि आ अमरलत्ती तेसर पड़ोसी- खजूर- लग जा अपन-अपन दुखरा बेरा-बेरी सुनौलक। सभ बात सुनि खजूर बाजल-

"अहाँ दुनू गोरेक बीच कोनो हक-हिस्साक लड़ाइ तँ नै छी, ई तँ मोंछक लड़ाइ छी। फुसि बातक झेलमे पड़ि जे 'हम पैघ तँ हम पैघ' परेशान छी। मुदा, अहाँक पंचैती हम नै करब, कियो दोसर करत। हम तँ अपने छोट-अछोप छी जे काते-करोटमे रहि देखै छी जे कियो छोटो काज कऽ नमहर बनि गेल अछि आ कियो पैघ काज करैत, तियाग करैत मरियो गेल। मुदा पैघ नै बनि सकल। अखन धरि तँ हमरा वनस्पति जगतमे बान्ह-ठाठ केने अछि, तखन हम पंचैती केना करब।"

खजूरक बेथा सुनि दुभि आ अमरलत्तीकेँ दुखो भेलै आ अचरजो लगलै। दुनू पुछलकै-

"एना किए बजलौं, हमरा दुनूकेँ अहाँ ठेलिया कऽ भगबए चाहै छी? दुखी भऽ हम दुनू गोरे अहाँ लग एलौं जे हमरा सबहक ओझरीकेँ सोझरा देब आ अहाँ मुँह मोड़ै छी।"

खजूर बाजल-

"हम अपन बितलहा बात कहब तँ बिसवासे ने हएत। अखन अहाँ दुनूक सुनलौं, जँ समए अछि तँ हमरो दुखरा सुनियेँ लिअ।"

दुखक गप तँ दुखिते मनसँ निकलैए। खजूरक आँखिक नोर सौनक झड़ी सन झहरए लगल। बाजल-

"हम आ नारियल दुनू दियादे छी। दुनू रूप गुणमे अन्तर भेने लोक सभ नारियलकेँ ऊँच स्थान दऽ पूजा करै छैन आ हमरा छोटोमे छोटहा मानैए। जखन कि हम काजो आ तियागो बेसिये केने छी। हम अपन खून पियाकेँ लोकक मन भरै छी, फड़ो गुड़ सन मीठ

होइए, मुदा नारियल तँ उपरसँ कठोर, भितुरका गुद्दाक सुआद ने तीते आ ने मीठे होइ छै। तखन ओकरा लोक पूजापर ऊँचगर आसनपर बैसा महंथ बनौने रहै छै। अहीं दुनू गोरे कहू जे हमर न्याय आइ धरि कियो केलक?"

खजूरक बेथा सुनि दुभिक संग अमरलत्तियोकेँ ज्ञानक आँखि खुजल। मुड़ी डोलबैत विदा हुअ लगल। खजूर फेर बाजल-

"जखैन अपनेमे लड़ि-झगैड़ मरब तँ आगूक लड़ाइ लेल रणक्षेत्र के टेकत? आइ धरि जे तियाग आ बलिदान केलिऐ तेकर तँ न्याय भेटबे ने कएल आ अड़खिसे जे मोंछक लड़ाइ लड़ै छी तेकर न्याय के करत?"

O

केते उचित

भूषण बाबू गामक जमीनदारक इकलौता पुत्र छैथ। गामोमे आ आनो गाममे आदर-सम्मान होइ छैन। भूषण बाबू लोकप्रिय छैथ। उपकारी सोभाव छैन। बेटाक जन्म दैत पत्नीक मृत्यु प्रसवे कालमे भऽ गेलैन। भूषण बाबू उदास आ चिन्तित रहितो खेती-बाड़ी नोकर, हरवाह आ जन-मजदूरक सहयोगसँ करबै छैथ। बेटाक लालन-पालनपर विशेष धियान रखै छैथ। तीन पीढ़ीसँ एक-पुरखियाहे आबि रहल छैन।

भूषण बाबूकेँ पत्नी नै रहने गामक शुभचिन्तक इष्ट-मित्र सभ चुमौन कऽ लेबाक सलाह दैत रहलैन-

> "बाबू साहैब, असगरे जिनगी केना चलत। जखन घरमे घरनी नै रहत तँ घर नरक सन भऽ जाएत।"

मुदा भूषण बाबू लोकक बातकेँ अन्ठियबैत रहला। मनमे होइ छैन जे चुमौन करब तँ बेटा- लाल बाबू-क जिनगीमे सतमाए बाधा बनत। कहीं सतमाए कुभेला करतै आ बेटे जँ मरि जाएत तखन तँ वंश नाश हएत।

जखन लाल बाबू पाँच बर्खक भेल तँ भोर-साँझ पढ़बैले दूटा गुरुजीकेँ लगौलैन। दू बर्ख धरि घरक शिक्षा देला बाद लाल बाबूकेँ शहरक मसहूर स्कूलमे दाखिला करबैक विचार लाल बाबूक मामासँ पुछलखिन।

लाल बाबूक मामा लखनऊ शहरमे रहि सरकारी दफ्तरमे काज करै छैथ। सलाह लऽ लखनऊ शहरक नामी अंग्रेजी स्कूलमे लाल बाबूकेँ नाओं लिखा, भर्ती कऽ देलखिन।

लाल बाबू बच्चेसँ मेघावी, इण्टर प्रथम श्रेणीसँ पास कऽ मेडिकल परीक्षामे सफलता पौलक। पूणा मेडिकल काजैजमे प्रवेश कऽ डाक्टरीक पढ़ाइ शुरू केलक। चारि बर्खक पछाइत डाक्टर बनि घर आपस एला। गामक गरीब-गुरबाक इलाज मंगनीमे करए लगला। कनिके दिनमे ओ लोकप्रिय भऽ गेला। डाक्टर लाल बाबूक उद्देश्य अछि जे शहरमे बहुत सुविधा-साधन, पैघ-पैघ डाक्टर आ अस्पताल अछि। मुदा गाम-घरमे गरीबक इलाज लेल ने साधन आ ने डाक्टर अछि। तँए हम अपन सेवा गाम-घरमे करब।

चैत मास,गहुम-कटनी चलि रहल अछि। भूषण बाबू जन-मजदुर लगा गहुमक कटनी-दौनी करबै छैथ। तेज रौदमे रहने भूषण बाबूक मन पीता गेलैन। बेमार पड़ि गेला। तखन खेतक उपजा-बाड़ीक काज के देखत, तेकर चिन्ता सेहो होइन। मुदा दोसर दिन लाल बाबू पिताजीकेँ पनपिआइ करा, बोखारक दबाइ खिया कऽ कहलकैन-

“बाबूजी, अहाँ अराम करू हम खेतक काज देखए जाइ छी।”

पिताजी सलाह दैत कहलखिन-

“एहेन कपरफोरा रौदमे तूँ नै जाह। तोरा ने खेत देखल छह आ ने काजक हूनर छह।”

लाल बाबू पिताकेँ कहलखिन-

"अहाँ बीमार छी, अराम करू। जखन हम घर आएल छी तँ खेतक काज देखब तखने ने सीखबो करब। नोकर- रघु-केँ संग कऽ जाएब। ओ सभ किछु बता देत।"

लाल बाबू विदा भेला। ओना, खेतक-मुँह आँखि नहियेँ देखने छला। मुदा तैयो पहुँचला। गहुम फसिल देख लाल बाबू खुश भेला। रघु कहलकैन-

"डाक्टर साहैब, ई बीस-बिघबा प्लौट अपनेक छी। जइमे गहुम अछि। गामक पछबरिया बाघमे दस-बारह बीघा गहुम आरो कटबैक अछि। तीस-पैंतीसटा मजदूर कटनीमे लागल अछि। पाँच-छह दिनमे कटनी आ दू-तीन दिनमे दौनी करा निसचिन्त भऽ जाएब। किएक तँ अखन पछिया हवाक लहकी चलि रहल अछि। ई समए गहुमक कटनी आ दौनी लेल उत्तम अछि। ऐमे जे किसान पछुआएल ओ साल भरि कानत।"

लाल बाबू बजला-

"रघु, तूँ बड़ नीक विचार देलह। सएह करब। मुदा तूँ घर जा, नीकसँ भोजन बना बाबूजीकेँ भोजन कराबिहऽ आ हम कटनीक देख-भाल करै छी।"

चैतक रौद चण्डाल रूप धेने छल जे डाक्टर लाल बाबूक कोमल देहकेँ कुम्हला देलकैन। घामे-पसीने जखन तर-बत्तर भऽ गेला तखन गाछ-वृक्षक खोजमे नजैर दौड़बए लगला। खेतसँ किछे दूर हटि रस्ता कातमे एकटा आमक चतरल गाछ देखलैन। ओइ गाछक छाहैरमे जा सुस्ताए लगला।

दिनक एगारह बजैत छल। बोनिहार सभ काटल गहुमक बोझ बान्हि दौनीक स्थानपर रखि-रखि अबै छल। गाछतर बैसल लाल बाबू अपन

परिवारक दशा-दिशापर विचार करए लगला। एतेक जमीन आ सम्पैत अछि मुदा खेनिहार तँ दुइए बापुत छी..!

फेर लाल बाबूक नजैर दोसर दिस बढ़लैन। जखन एतेक जमीन अछि। तखन हमरा गाम-घर छोड़ा शहरमे रखि डाक्टरी किए पढ़ौलैन? डाक्टरी-पढ़ाइ तँ विपरीत भेल। जखन एतेक जमीन अछि तखन एग्रीकल्चर-पढ़ाइ करितौं। उन्नत खेती करितौं। आ बेसी-सँ-बेसी लोककेँ मजदूरीक अवसरो...। गामक किसानीक विकास सेहो नीक जकाँ होइत। मुदा से तँ नै भेल।

लाल बाबूक मनमे फेर उपकलैन। गामेमे रहि डाक्टरी बिना फिस-फास लेने करब। तहूसँ समाजक भलाइ हएत। संगे आधुनिक तरीकासँ खेतियो कराएब।

रंग-बिरंगक विचार लाल बाबूक मनमे उठैत रहलैन। तखने दस-बारहटा स्कूलिया छात्र-छात्रा आबि ओही गाछ लग जिराए लगल। गामक विद्यार्थी। पाँच किलो मीटर दूर जा हाई-स्कूलमे पढ़ैत।

डाक्टर लाल बाबूकेँ ने ओ विद्यार्थी सभ चिन्हैन आ ने लाले बाबू विद्यार्थी सभकेँ चिन्हैत रहथिन। लाल बाबू विद्यर्थी सभसँ परिचए-पात करए लगला। जखन सभ कियो गामेक छी कहलकैन, तखन नि:संकोच बात हुअ लगल। चारू लड़कीसँ पढ़ाइक बात पुछलखिन। जइमे एकटा लड़की जे मैल-कुचैल वस्त्र पहिरने छलि, मुदा सुन्दर-शुशील छरहर काया, जेना चानकेँ मलिन करैत। डाक्टर लाल बाबू ओइ लड़कीसँ नाओं-पता पुछलखिन।

ओ बचिया कहलकैन-

> “नाओं चम्पा छी, उतरवारि टोलक महेसरजीक एकलौती बेटी छी।”

चम्पा पढ़ैयोमे तेज आ देहो-दशा छरहर। मैट्रिकमे प्रथम श्रेणीसँ उतीर्ण। इण्टरक तैयारी जीन-जानसँ करैत। लाल बाबू प्रभावित भेला।

लगभग बीस मिनट समए निकैल गेल छल। सभ विद्यार्थी ओतएसँ विदा भऽ गेल।

गहुमक कटनी सम्पन्न भेला पछाइत डाक्टर लाल बाबू घर आबि पिताजीसँ हाल-चाल पूछि दोसर खोराक दवाइ दऽ बजला-

"बाबूजी, अखन अराम करू। हम नहा-खा कऽ गहुमक दौनी करए चलि जाएब।"

साँझक समए भूषण बाबूसँ भैंट करए चारि-पाँचटा मित्र आ दूटा पड़ोसी एला। गप-सप्प हुअ लगल। बहुतो गपो भेल आ सलाहो-विचार भेल। जइमे भूषण बाबूक एकटा मित्र- गिरधारी बाबू- सलाह दैत कहलकैन-

"केतेक दिन कष्ट काटब, जखन चुमौन अपने नै केलौं तँ बेटाक बिआह कऽ लिअ। बेटा डाक्टर भेल, ओ अपन डाक्टरी करत कि अहाँक सेवा करत। मुदा पुतोहु तँ घरमे रहती दुनू वक्तक भोजन समैपर भेटत आ घरक आनो काज देखती।"

बातकेँ लोकैत आ आगूए दिस फेकैत दोसर मित्र- बिपीन बाबू- बजला-

"यौ, यू.पी.मे अपने सबहक जाति अमर चन्द्र बाबू एस.डी.ओ. छैथ। हुनकर बेटी- रानी- बी.ए. पास कऽ मिडियाक कॉल-सेन्टरमे काजो करैए।"

आनो लड़की सबहक चर्च भेल। मुदा भूषण बाबू उत्तर दैत बजला-

"देखू हमरा तँ लाल बाबू एकेटा बेटा अछि। बिआह करैसँ पहिने हुनकोसँ राय-विचार ने करए पड़त। जँ इनकार चलि गेल तखन की हएत।"

बिपीन बाबू बजला-

“ओ कोनो पैघ समस्या तँ नै छी, अदनासन बात-ले बेसी मगजमारी किए करब। अखने डाक्टर साहैब लग जा विचार कऽ लइ छी।”

उठि डाक्टर लाल बाबूक कोठलीमे जा गप-सप्प करए लगला। तही बीचमे बिआहक चर्च उठौलखिन आ केतेको उदाहरण देलखिन। मुदा डाक्टर लाल बाबू कोनो बच्चा तँ नै छैथ। अपन परिवारक स्थिति आ दिशा-दशा देखैत उत्तर दैत बजला-

“बिआह करब मुदा पहिने हम अपन विचार सुना दइ छी, तैपर सभ कियो एकमत भऽ जाएब तखन ने।”

बिपीन बाबू बजला-

“अपने स्पष्ट भऽ कऽ बाजू ने जे की मत अछि। तखन ने एकमत हएब कि अनेक मत।”

डाक्टर लाल बाबू बजला-

“हम ओहन लड़कीसँ बिआह करब जे पढ़ल-लिखल हुअए आ किसानक बेटी हुअए। जे परिवारक काज करैत हमरो देखत आ हमरा पिताजीकेँ सेवो करत। शहरी नै गामक जिनगीसँ जुड़ल कुल-कन्या हुअए। बिना दाने-दहेज लेने बिआह करब।”

बिपीन बाबूकेँ माथ चकरा गेलैन। समझबैत लाल बाबूकेँ कहलखिन-

“देखू लाल बाबू, अहाँ पैघ कुल-खनदानक छी। अहाँक बरबैर परिवार अपना परोपट्टामे नै अछि। बिआहक सम्बन्ध तँ लोक बराबरीमे करैत अछि।”

डाक्टर लाल बाबू चुप भऽ सोचि-विचारि बिपीन बाबूकेँ कहलखिन-

"अपने पिताक समान छी। हमरा विचारसँ सभ मनुख एके जाति छी, भलैं काज आ व्यवसाय अलग करैए। जिनका जइ काजक हूनर रहै छै ओ से काज करैत जिनगी चलबैए।"

बिपीन बाबू बजला-

"तखन आगू की करब, सेहो खुलि कऽ बाजू।"

डाक्टर लाल बाबू अपन विचार स्पष्ट करैत आगू बजला-

"लड़की खोजैले दूर-दूर जेबाक जरूरत नै अछि। अपने गामक उतरवारि टोलमे महेसरजीक पुत्री छैन, सुन्दर-सुशील सभ गुणसँ सम्पन्न। जँ सम्भव हुअए तँ सम्बन्ध करैक विचार कएल जाए।"

ई बात सुनिते बिपीन बाबू तमसाइत उठि कऽ भूषण बाबू लग जा जोर-जोरसँ बजला-

"बाबू साहैब, अपनेक बेटाक मति कुमति भऽ गेल अछि। ओ जाति-पाति किछ ने मानैए आ नीच जातिमे बिआह करैक मन बनौने अछि। जे कियो ने केलक से अहाँक बेटा करत आ समाजमे सबहक नाक कटा कुल-खनदानकेँ धँसा देत!"

भूषण बाबू मित्रक बात सुनि तमसा गेला।मनमे जेनाआगि लगि गेलैन। मुदा मनक आगि मिझबैत विचार करए लगला। समस्या पैघ अछि जँ हूसि जाएब तँ नाँहकमे सभ केलहा पानिमे चलि जाएत। निर्णए लेलैन- जेना बेटा खुशी रहत तहिना करए पड़त। अइले हमरा आमिल पीने आरो गड़बड़ हएत। एकलौता अछि, जँ कोनो दोसर दिस डेग बढ़ा लेत तँ नमहर मुसिबतमे फँसि जाएब।

आगू-पाछू सोचैत भूषण बाबूक मनमे एलैन- महेसर गरीब आ छोट जातिक छी, जँ सम्बन्ध करब तँ गामक लोक हँसत। आइ भलें बेटा पढ़ि-लिखि डाक्टर बनि गेल मुदा अछि तँ बच्चे। बच्चा मनमे अबिते भूषण बाबूकें मन पड़लैन, लाल बाबू अछि तँ बच्चेसँ जिद्दियाह आ एक बोलिया..!

खण्डन-मण्डन करैत भूषण बाबू बेटा लग जा बजला-

"बौआ, अहाँ एहेन निर्णए किए लेलौं?"

डाक्टर लाल बाबू आदर-भावसँ पिताकें कहलखिन-

"बाबूजी, अहाँ पुरना रीति-रेबाज, जाति-पाति, उच्च-नीचक भेद-भावकें मनसँ हटा कऽ देखियो-सोचियो तखन जे अहाँक हृदय कहत ओ मानि लेब। अहाँ जिनका गरीब, नीच माने छिऐन वएह लोक सभ काजो कऽ दइए आ दुख-सुखमे सहयोगो करैए। लोक काजसँ छोट-पैघ होइए मुदा इज्जतमे बरबैर होइए। सबहक देहमे लहू एके रंगक होइ छै। हुनके सबहक परिश्रमक बले समाज आ देश टिकल अछि। ई तँ लोकक नजैर बदलल छै जे नीककें अधला आ अधलाकें नीक बुझैए। आ लोके की, ई दोष बेवस्थाक छी।"

बेटाक नीक बात सुनि भूषण बाबूक मन घूमि कऽ घुरियए लगलैन। घुरियाएले मने बिपीन बाबू आ पड़ोसिया सभ लग आबि बजला-

"बेटा हमर जे निर्णय लऽ नेने अछि, से बदलत नै तँए सभ ओझरी छोड़ि बिआह केना सफल हएत तेकर उपाय करू।"

बिपीन बाबू बजला-

"ऐ काज लेल अगुआ के बनत। जे अगुआ बनबो करत तेकर मुँह समाजमे थकुचल जाएत।"

भूषण बाबू-

"मित्रक असल पहचान लोक दुखक समैमे करैए। अहाँ हमर लंगोटिया मित्र छी, ऐ दुखक घड़ीमे संग नै देब से केहेन हएत? ऐ काजक भार अहींकेँ दइ छी। काल्हिये अहाँ दू-तीन गोरे महेसरजीक घर जा एकान्तमे बसि समझा-बुझा कऽ मनाउ। तइले अहाँकेँ जे करए पड़त से अपने विवेकसँ करू। मुदा धियान राखब जे आन कियो ने सुनए।"

तैपर पड़ोसिया- चन्दू- बाजल-

"बेसी लोक किए जाएत, जखने बेसी लोक जाएत तखने काने-कान बीआ-बान भऽ जाएत। ऐ काजक लेल बिपीन बाबू असगरे फिट छैथ।"

बिपीन बाबू-

"जँ कहीं महेसर इनकार कऽ देत तखन?"

भूषण बाबू-

"तखन आग्रह-विनती करैत गपकेँ आगू बढ़ाएब।"

बिपीन बाबू महेसर ऐठाम जेनाइ उचित नै बुझलैन। ओ सोचि-विचार कऽ रघुकेँ भेज महेसरकेँ बजा एकान्तमे बैस कहलखिन-

"महेसरजी, अहाँ अपन बेटी चम्पाक बिआह डाक्टर लाल बाबूसँ करू। तँए अपनेकेँ बजेलौं हेन।"

बात सुनि महेसरकेँ मजाक बूझि पड़लैन। बजला-

"ई सभ कहि हमरा किए बेइज्जत करै छी। केतए हम आ केतए भूषण बाबू! केना हमरा ऐठाम सम्बन्ध करता..!"

मुदा बिपीन बाबू भूषण बाबूक खाँटी मित्र छथिन। झूठ-फूसक भाँजमे कहियो ने रहैबला लोक छैथ। महेसर चूप। बिपीन बाबू महेसर दिस तकैथ आ महेसर बिपीन बाबू दिस।

बहुतो परियाससँ महेसरकेँ सम्बन्ध करबा ले मना लेलखिन। बात मानिते मन हरियेलैन। मनक मौध टपकए लगलैन। खुशीक माहौल देख बिआहक दिन निश्तुकी भेल आ तैयारीमे सभ जुटि गेला। बिनु दहेजक बिआह, खूब धुम-धामसँ सम्पन्न भेल। मुदा जखन बेटीक विदाइक समए आएल तखुनका दृश्य देखल नै गेल। एतेक दर्दनाक रहए जे सबहक आँखिसँ नोर बहए लगल।

जहिना दुलहा मइटुगर तहिना दुलहिनो। समाजक लोक सभ बाजए- चम्पाक माइक अभावक पुरा के करती। चम्पाकेँ सासुर बसने महेसर असगरे अनाथ जकाँ बुढ़ाड़ी केना काटत?

चम्पा विदाइ भऽ सासुर गेली। सासुक अभाव भेने घरक काज अपनेसँ करए लगली। पुतोहुक लूरि-ढंग देख भूषण बाबू खुश रहए लगला। स्वर्गक समान घरक वातावरण बनि गेल।

चम्पाक पिता असगरूआ। असगरूआ जिनगी भेने महेसरजीक घर नरक समान लगैत।

किछु दिनक पछाइत अनचोकेमे भूषण बाबू महेसरजीक घर एला। अबिते समैधक दशा देख मन दुखा गेलैन। मनमे उठलैन, समैधक दुखक जिनगी केना बाँटल जाए?

..कनी कालक पछाइत भूषण बाबू बजला-

> “समैध, आब अपना सभ एक भेलौं। एक खून आ एक रिस्ताक परिवार भेल। अहाँकेँ असगर देख हमर विचार अछि जे एकेठाम एके परिवारमे रही। जेहने हमर बेटा पुतोहु तेहने अहूँक बेटी जमाए।”

महेसरजीक मनमे केतेको बात आबए लगलैन। एक तँ ओहिना समाजक लोक रंग-बिरंगक बात बजैए, जे महेसर एना किए केलक। चम्पा गामक बेटी भेल आकि पुतोहु? भूषण आ महेसर गामक भैयारी भेला आकि समैध? इत्यादि...। आ तैपर बेटी ऐठाम रहब केते उचित..?

O

इज्जतक सवाल

गामक मुँहपुरुख मुखिया चंचल बाबूक बहिनक बिआह छी। गौआँ सभ पहिनहिसँ नाचक ओरियान करैले मुखियाजीसँ कहने छेलैन। मुखियाजी नाचक कम्पनी यूसूफ रहमानकेँ बजा नाचक साटा बनौने छैथ। रहमान कम्पनीक नाच ऐ परोपट्टामे नामी अछि।

जखने नङेरापर चोट पड़ैए कि कोस भरिक नाच देखनिहार जर हुअ लगैए। जहिना ऐ नाच पाटीमे एक-पर-एक नचनियाँ-गबैया अछि तहिना ढोलक-नङेराक संग आनो-आन साज-बाज। सभ साज-बाज आ नचनियाँ-गबैयाक संग ताल-मिलानी सेहो सुन्दर अछि। तेतबे नै, बीच-बीचमे रसमंजरी लेल लोकगीत आ भाव नृत्यक बेवस्था सेहो नीक अछि। जइमे इलाकाक मशहूर दूटा डान्सर कलाकार लखना आ बुचना अछि। एक तँ नाच मशहूर तैपर फिल्मी गीतक संग डान्सो होएत।

दिनेमे मुखियाजी यूसूफ रहमानकेँ बजा कहलकैन-

> “देखह रहमान, आइ इज्जतक सवाल अछि। बरियातीसँ लऽ कऽ गौआँ-घरूआ सभ रहत, किनको कोनो अभाव नै होइ। नीकसँ नाच हुअए, कोनो हल्ला-फसाद ने उठए तेकर धियान रखिहह। जगह टेब नाचक मंच जेतए नीक बैसत से सभ अखने बना लएह।

> नाचक मेरियामे जेतेक कलाकार सभ छैथ, सभकेँ समैसँ पहिनहि बजा, खुआ-पीआ दिहक।”

कम्पनी रहमानजी मुखियाजीक बात सुनि मंच बनबैक ओरियानमे भीर गेला। मंच बनि तैयार भऽ गेल।

साँझक समए। नाचक सभ मेरिया पहुँच गेला मुदा दुनू डान्सर नै पहुँचल। कम्पनी रहमानजीकेँ चिन्ता बढ़ि गेलैन। इज्जतक सवाल अछि, जँ नाच गड़बड़ हएत तँ हमर कमाएल इज्जत माटिमे मिलि जाएत। ऐ समाजमे जे नाचक खातिर हमरा प्रतिष्ठा भेटल अछि से डूमि जाएत।

लखना आ बुचना दोसर कम्पनीक नाचक मेरियामे नाचए गेल छल। ओना ओ साटा काल्हिये तकक रहै, मुदा नाच सुन्दर भेने दुनूकेँ रोकि नेने छल। दोसर कम्पनी लाल बिहारीसँ यूसूफ रहमानकेँ दोस्तियारे छैन। लाल बिहारी कोसी बेल्टक नामी नाच कम्पनी छैथ। कोसी बेल्टमे रंगदारियो बेसी छइहे, किछु रंगदार लाल बिहारीकेँ घेरने छल जे एक राति नाच देखा जइहह। जे पाइ लेबह से लिहह।

कम्पनी लाल बिहारी सोचै छल जे बेसी रूपैआ हएत तँए दुनू डान्सरोकेँ बेसी रूपैआक लोभ देने छल। तैपरसँ चारि-पाँचटा भोलेन्टीयरकेँ सेहो लगौने छल जे कहीं लखन-बुचना भागि ने जाए। नाचो सबेर-सकाल शुरू करबाक छेलै। गामक लोक सभ नाच देखैले बेहाल। घर दरबज्जासँ सटले नमहर चौमास खसल छल। तहीमे नाचक स्टेज बनि तैयार छल। लाल बिहारीक मन चपचपाइत जे आइ हमर नाम अहू इलाकामे बढ़त। मुदा जे इज्जत नाच खातिर लाल बिहारी कमबए चाहै छल तइसँ बेसी रहमान कम्पनीकेँ इज्जतक सवाल छल।जौं आइ रहमानक नाच नै जमतै तँ कमाएल इज्जत माटिमे मिलि जेतइ। दोसर, मुखियाजीक इज्जत सेहो...।

यूसूफ रहमानक मनमे शंका हुअ लगलै जे कोनो साजिश रचि लाल बिहारी हमरा संगे छल कऽ रहल अछि। से तँ हम अपना जीबैत नइ हुअ देबै। दोसर-तेसर साँझ पड़ल। तीनटा बलन्ठगर संगीकें संग कऽ रहमानजी लखना-बुचनाक खोजमे निकलल। चलैकाल रहमानजी नाचक मनेजरकें कहि देलक जे अहाँसभ समैपर नाचक ओरियान करब। हम बुझू गेलौं आ एलौं।

रहमानजी चारू गोरे लफरैत कदमाहाक पूबारि टोल दिस चलल जे कोसीक छोटका धारक पूबरिया छींटपर भरिगर बस्ती अछि। छोटका नाहसँ पार भऽ लाल बिहारीक घर पहुँचल।

लाल बिहारी दलानमे लोकक भीड़, अपने लाल बिहारी महींस दूहै छल। महींस दूहि ओही दूधक चाह बनत आ काजकर्ता सभकें पीऔत आ तेकर बाद नाचक ओरियान करत। घरसँ सटले नाचक स्टेज बनल देख रहमानजी बूझि गेला जे ऐ खातिर लाल बिहारी लखना-बुचनाकें रोकने अछि।

रहमानजी दरबज्जासँ दूरे रहए तखने जोर-जोरसँ लाल बिहारीक नाओं लऽ लऽ पुकारए लगल। अवाज दैत लगमे पहुँचल आ बाजल-

> "हमर समांग लखना-बुचना केतए अछि, अखन तक गाम नै पहुँचल हेन?"

लाल बिहारी किरिया खाइत बाजल-

> "जनता भगवान, हम सभ अखने कनियेँ पहिने गाम एलौं। बड़का केसीक ओइ पारसँ। लखना-बुचना ओही पारमे नदी फीरैले गेल छल तखने नाह खुजि गेल। अखन रातिमे नाह नै आएल तँए ओ दुनूगोरे ओही पारमे रहि गेल।"

मुदा रहमानजी नाचक ओरियान आ स्टेज बनल देखने, किछु ने नाचक खातिर लखना-बुचनाकें नुका कऽ रखने अछि। बाजल-

"लाल बिहारीजी हमरा संगे अहाँ क्षल केलौं। दोस्तीमे कुश्ती करब की?"

कहि रहमानजी बड़का कोसी दिस विदा भेल। बस्तीसँ हटि रहमानजी विचार केलक जे अछि तँ दुनू छौड़ा अहीठाम। से नइ तँ नाच शुरू होइसँ पहिने मेकप करबे करत। पहिने मेकप करत तखन ने स्टेजपर जाएत। तही घड़ी पकैड़ लेब आ गाम दिस विदा भऽ जाएब।

एकटा संगी बाजल-

"आ जखन गौआ सभ लंठै करत तखन की करब?"

रहमानजी अपने रंगवाज, हिम्मतगर लोक। अपना जमानाक खलीफा। बाजल-

"किछु ने कियो कऽ सकत। खाली दुनूकेँ पकड़ पहिने।"

रहमानजी चारू गोरे भाँटा-बाड़ीमे नुका कऽ बैस गेल। किछु कालक बाद जखन नाचक सूरसार भेल तखन चारू गोरे सोझे मेकप रूममे जा दुनूकेँ पकड़लक। दुनू गोरेकेँ दुनू दिससँ दुनू गोरे दुनू बाँहि पकैड़ सोझे गाम दिस विदा भेल। लोक सभ देखते रहि गेल। जहिना पिंजरासँ पक्षी उड़ि जाइए तहिना।

बुचनाकेँ रहमानजी कहलक-

"एकोबेर बजलें तँ नस काटि धारमे भँसिया देबौ।"

रहमानजीक बात सुनि दुनू छौड़ाक होश उड़ि गेल। छोटाक कोसी धार पार भऽ सिसौनीमे दूटा मोटर साइकिलक बेवस्था कऽ साढ़े दस बजे रातिमे स्टेज लग पहुँचल।

नाचक स्टेजपर बाजा गनगनाइत छल। देखनिहार लोक करमान लगल छल। गौआँ सभ बरियातीक द्वार लगबै छल।

लखना-बुचनाक मेकप भेलै छेलै, स्टेजपर चढ़ा देलकै।

प्रार्थनाक गीत भेला पछाइत फिल्मी गीत आ डान्स शुरू भेल-

"परदेमे रहने दो परदा न उठाओ... ।"

बरियातीक स्वागतक पछाइत मुखियाजी रहमानक खोज केलैन। खोजैत नाचक स्टेज दिस एला। रहमानपर नजैर पड़िते मुखियाजी रहमानक मन दुखी देखलैन। पुछलखिन-

"रहमान भाय, मन दुखी देखै छिअ! किछु भेलह हेन की?"

रहमान बाजल-

"भेल नै किछो मुदा कनी परेशानी तँ इज्जतक खातिर होइते छै।"

मुखिया रहमानक बात नै बुझलैन। रहमान बाजल-

"अखन अखुनका काज निपटए दिअ, काल्हि भिनसर सभ बात कहि सुनाएब।"

O

बेंगक महंथी

जेठुआ समए गर्मीक तपिश आ उम्मस रहने हवा गुम-सुम भेल अछि। भण्डार कोणमे थोड़बे चिटफटाह करियाएल मेघ बूझि पड़ल। किछु बेंग बर्खाक आगम मानि टर्र-टर्र करए लगल। जखने भण्डार कोणमे मेघ जुटुआ देखाइए तँ लोको सभ अनुमान करए लगैए जे किछु-ने-किछु बरखा हेबे करत। तैपर बेंगक बोली सुनि पूर्णरूपेन लोक बूझि जाइए जे बरखा हएत। बरखा हएत तखने ने लोक बीआ-बालि पाड़त। भेल सएह। हवो उठल आ बरखो भेल। नीक बरखा भेल। खत्ता-डबरा भरि गेल आ खेतोमे डकरा हाल भऽ गेल। खत्ता-डबराकेँ भरने बेंग सभ अपन-अपन जगह पकैड़ टरटराए लगल। सभ बेंग खुशी मनबैत कियो टरटराइत तँ कियो गीत गबैत। तैबीच एकटा बेंग परवचन करए लगल-

> “हम बेंगमे श्रेष्ठ छी, ज्ञानी छी, से अहाँ सभ मानि लिअ। किएक तँ हम बरहमसिया बेंग छी। सबहक सभ दिन सेवो करैत सुखलो जमीनपर आ पानियोँमे दुख-सुख सहि जिनगी बितबै छी। मुदा अहाँ सभ तँ समैया बेंग छी। जखन बरखा होइए तखने भुरुकबा जकाँ भुक-दे उगि दर्शन दइ छी। बाँकी समए बिलाएले रहै छी।

तँए अहाँ सभ अपनामे ठीकसँ विचारि कऽ हमरा काज-भार दिअ।"

ढौंसा बेंग बाजल-

"असल बेंग तँ हम सभ छी, अहाँ केना एते छोट रहैत नमहर पदक भार लेबए चाहै छी।"

कठबेंग बाजल-

"हमरा छोट अहाँ ने बुझै छी, मुदा पढ़ि-लिखि ज्ञानी बनि परवचन जे करै छी आ ज्ञान बँटै छी तखन महंथ केना ने बनब।"

कठबेंगक बात सुनि एकटा ढौंसा बेंग ससैर कऽ कठबेंगक लगमे आबि बाजल-

"अपने जे कहै छी 'हम महंथ बनब' से केना बनब? बेंग रहितो अपनेक महत बेंगक श्रेणीमे अछि केते? ढौंसा बेंग सामने अहाँकेँ के पूछत? असलमे बेंगक सरदार ढौंसा अछि। ओ केना अपन जातिक मुँह-पुरुखी अहाँकेँ दऽ देत? जे बजलौं से बजलौं, एतएसँ सोझे आपस भऽ जाउ।"

कठबेंग बाजल-

"एतेक दिन ने हम पछुआएल रही, मुदा अखैन तँ योग्य छी तखन अहाँ सभ महत्त किए ने देब।"

ढौंसा बाजल-

"अपने छोट भऽ कऽ एतेक छी आ हमरामे जे सेरसँ लऽ कऽ अढ़ैया तकक अछि, जे अहाँकेँ कखनो खा-पचा सकैए, से किछु

ने? छोट-मुँह आ नमहर बात! भागू नइ तँ सभटा परवचन घोंसाइर देब।"

कठबेंग हिम्मतगर, हवा पीब देह हनुमान जकाँ फुलबए-बढ़बए लगल। तैबीच दोसर ढौंसा बेंग लग आएल आ बाजल-

"अहाँक बनर-भुलकीसँ हम सभ थोड़बे डरब। अहाँ अखन धरि बेंग जातिक लेल की सभ केलिऐ हेन। ने जातिमे मिलि कऽ रहलिऐ आ ने कोनो तियागी-तपस्वी बनि जातिक उद्धार केलिऐ, तखन महंथी केना चाहै छी।"

एमहर सभ बेंग अपन-अपन घेघ फुला-फलका भों-भाँ करए लगल। मुदा कठबेंग हेहर-थेथर बनि टससँ मस नइ भेल। तखने तेसर ढौंसा बेंग चौकन्ना होइत लग आएल, बूझि पड़ल जे जातिक सेरगर सरदार छी, बाजल-

"अपने असलमे परवचन कर्ता छी आकि हाले-सालमे ढोंगी बनि जातिमे धाक जमबए चाहै छी? आइ धरि दोसराक सुनल परवचन केलिऐ कि अपन वचन लोककेँ सुनेलिऐ? जिगनी केहेन रहल अछि तैपर पहिने विचार करू तखन ने समाज महत देत जखन समाजिक जिनगी रहत।"

सवालक जवाब दैत कठबेंग बाजल-

"अहाँ सभ तँ असलमे अबसरवादी सामन्तवादी कमतिया छी सालमे तीन-चारि मास पानिक धनिक भेने दर्शन दइ छी, मुदा हम तँ बारहो मास सबहक सामने अपन समाजमे रहै छी। लोकक कल्याण करै छी। से केना सेहो सुनियैँ लिअ- जखन रौदी भेने लोक

> जट-जटीन बरखा खातिर खेलैए तखैन उक्खैरमे दऽ हमरा समाठसँ कुटैए आ हम बेदमोमे बाजि-बाजि मेघकेँ बजबै छी आ बरखा होइ छै। लोकक कल्याण होइ छै। हम केना ने लोकक हित-कल्याण लेल तियाग आ बलिदान करै छी? छैथ कियो हमरा सन तियागी, तँ हुनका सामने आनू, हुनके महंथी सभ मिलि दऽ देबैन।”

कठबेंगक बात सुनि ढौंसा-सरदारकेँ मन गरमेलइ। गरमाइते लपैक कऽ कठबेंगक गरदैन पकैड़ कुश्ती करए लगल। मुदा हिमतगर कठबेंग, अपन जान गमबैले तैयार होइत डँटल रहल।

एकाएकी बहुतो ढौंसा बेंग आएल आ सरदार बेंगकेँ कहलक-

> “सरदारजी, नाँहकमे अपन ऊर्जाकेँ किए नोकसान कऽ रहल छी। एतेक दिन अपना सभ महंथी नेने रही, मुदा आब किछु दिन हिनके महंथी दऽ दियौ। जखन जान गम्बैले तैयार अछि, माटिपर रहैक आदत छै, मानि कऽ चलू ने जे समाज लेल जरूर करत।”

O